

अवबोध'क माध्यम

राष्ट्रीय परिसंवाद 2008-2010 पर आधारित



हमहूँ जँ स्कूलमे होइतहुँ



अप्पन भाखा सुनतिहुँ
बुझितहुँ
कहि पबितहुँ
नवगछुली उगबितहुँ

अवबोध'क माध्यम

राष्ट्रीय परिसंवाद 2008-2010 पर आधारित

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

32154 — Samajh ka Madhyam
Rashytriya Parisamvad 2008–2010 per
Aadharit (Maithili Language)

ISBN 978-93-5292-769-2

First Edition

August 2024 Shravana 1946

PD 1T BS

© **National Council of
Educational Research and
Training, 2024**

₹ 65.00

*Printed on 80 GSM paper with
NCERT watermark*

Published at the Publication
Division by the Secretary,
National Council of Educational
Research and Training, Sri
Aurobindo Marg, New Delhi
110 016 and printed at Taj
Printers, 69/6A, Najafgarh Road
Industrial Area, Near Kirti Nagar
Metro Station, New Delhi 110 015

ALL RIGHTS RESERVED

- No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the publisher.
- This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade, be lent, re-sold, hired out or otherwise disposed of without the publisher's consent, in any form of binding or cover other than that in which it is published.
- The correct price of this publication is the price printed on this page. Any revised price indicated by a rubber stamp or by a sticker or by any other means is incorrect and should be unacceptable.

**OFFICES OF THE PUBLICATION
DIVISION, NCERT**

NCERT Campus
Sri Aurobindo Marg
New Delhi 110 016 Phone : 011-26562708

108, 100 Feet Road
Hosdakere Halli Extension
Banashankari III Stage
Bengaluru 560 085 Phone : 080-26725740

Navjivan Trust Building
P.O.Navjivan
Ahmedabad 380 014 Phone : 079-27541446

CWC Campus
Opp. Dhankal Bus Stop
Panihati
Kolkata 700 114 Phone : 033-25530454

CWC Complex
Maligaon
Guwahati 781 021 Phone : 0361-2674869

Publication Team

Head, Publication Division : *Anup Kumar Rajput*

Chief Production Officer : *Arun Chitkara*

Chief Editor : *Bijnan Sutar*

Chief Business Manager : *Amitabh Kumar*

Assistant Production Officer : *Deepak Kumar*

आमुख

बच्चाक प्राथमिक शिक्षा मूलतः भाषाक शिक्षा थिक। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे एक बेर फेरसँ मातृभाषामे पढ़ौनी जोरदार ढंगसँ प्रस्तावित कएल गेल अछि। शिक्षासँ जुड़ल पहिलुक सभ सुझावमे मातृभाषाक माध्यमसँ पढ़यबाक चर्चा भेल अछि। भारत बहुभाषी देश अछि। ताहि द्वारेँ सभ बच्चाक शिक्षाकेँ सहजतापूर्वक आ निर्बाध गतिसँ आगू बढ़यबा लेल भारतीय भाषाकेँ शिक्षाक माध्यम बनायब आवश्यक अछि। मातृभाषामे शिक्षण सभ विषयकेँ मजगूत आधार प्रदान करबामे सहायक होइत अछि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे ग्रेड-5 धरि मातृभाषेटाक माध्यमसँ शिक्षा भेटबाक चाही। अठमा आ ओकर बाद सेहो एकरा जारी रखबाक प्रयास होयबाक चाही। बहुभाषिकताकेँ बढ़ावा देबा लेल विज्ञान आ अन्य विषयमे मातृभाषामे उत्कृष्ट अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराओल जयबाक चाही। एहिसँ बच्चाक अपन भाषा आ स्कूली भाषाक बीचक अंतर कम होयत आ भाषा सभहक बीच एकटा मजबूत सेतु बनत। एकर आधार मातृभाषा होयत।

एहि महत्वपूर्ण योजनामे सहायक देशक विभिन्न विशेषज्ञ आ भाषा शिक्षा विभागक भूमिका महत्वपूर्ण अछि, हुनका सभकेँ धन्यवाद। आशा अछि जे ई पुस्तिका बाल शिक्षा पर काज करय बला विभिन्न राज्यक योजनाकार लेल आधार-पुस्तिकाक रूपमे सहायक होयत।

नयी दिल्ली
मार्च 2023

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

आमुख

बच्चाक जीवन आ हुनक शिक्षामे भाषाक भूमिका उपनिवेश रहि चुकल समाजमे अनेक तरहक विसंगतिसँ घेरायल अछि। एहि विसंगति पर विचार करबाक प्रयासो प्रायः सामाजिक मान्यता आ राजनीतिक विवादसँ घेरायल रहैत अछि। कोनो आश्चर्य नहि कि शिक्षा संबंधी भाषा-नीति लंबा समयसँ चर्चा आ शोध दुनू दायरासँ बाहर रहल अछि। ई स्थिति बदलबाक उद्देश्यसँ राष्ट्रीय परिषद् 'समझ का माध्यम' शीर्षकसँ गोष्ठीक शृंखलाक आयोजन कएलक। उदयपुर, पटना, वाराणसी आ दिल्लीमे आयोजित कएल गेल गोष्ठीक फोकस विद्यालयक दैनिक जीवनमे बच्चाक भाषायी अनुभवक विवेचना पर आधारित छल। कोशिश छल कि भाषाक प्रयोगमे शिक्षा नीतिक लम्बा समयसँ अवरुद्ध पड़ल बहस फेरसँ शुरू हो।

ई पुस्तक एहि कोशिशकेँ आगू बढ़यबाक उद्देश्यसँ प्रकाशित कएल जा रहल अछि। पुस्तकक विषयवस्तु चारू गोष्ठीमे उठाएल गेल प्रश्न आ ओकर उत्तर तकबा लेल इस्तेमाल कएल गेल तर्कक मदतिसँ रचल गेल अछि। हमरा आशा अछि कि एहि पुस्तकक मध्यमसँ बच्चाक शिक्षासँ सरोकार रखनिहार नागरिक-जाहिमे शिक्षक, हुनक प्रशिक्षक, अधिकारी, जन-प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनक कार्यकर्ता आ माता-पिता शामिल छथि- शिक्षणक भाषाक प्रश्न पर सोचबा आ संवाद करबा लेल उत्साहित हयताह। एहन संवाद आजुक ऐतिहासिक आवश्यकता अछि। “शिक्षाक अधिकार” कानून बच्चाक मातृभाषाक महत्त्वकेँ पुनर्स्थापित करबाक कोशिश कएलक अछि। एहि डेगमे शिक्षाक औपनिवेशिक इतिहासक विरासतसँ उत्पन्न मानसिक आ सामाजिक जकड़नकेँ दूर करबाक शक्ति छैक। स्पष्ट अछि, जे कोनो कानूनमे निहित शक्तिकेँ अभिव्यक्त हयबामे सामाजिक आ संस्थागत सहयोगक जरूरति होइत अछि। अंग्रेजी माध्यम स्कूलक प्रचलन समकालीन यथार्थे टा नहि अछि, एक टा जटिल सांस्कृतिक संरचना सेहो अछि। एकरा संवादपरक चेतनाक भीतर आनिएक’ कोनो बदलावक उमेद कएल जा सकैत अछि।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005 मे परिवर्तनक दिशा आ प्रकृतिक सम्बन्धमे पर्याप्त संकेत देल गेल अछि। ई संकेत सभहक विस्तृत खुलासा भारतीय भाषा आ अंग्रेजीक पढ़ाईसँ संबंधित राष्ट्रीय फोकस समूहक प्रतिवेदनमे कएल गेल अछि। ई

दुन्नू दस्तावेज कक्षामे शिक्षणक माध्यमकेँ बच्चाक समझक स्वाभाविक विकासक्रमक मनोभाषावैज्ञानिक संदर्भमे रखैत अछि।

एहि संदर्भक एकटा महत्वपूर्ण आयाम भारतक बहुभाषिक वातावरण अछि। बच्चा सभ जन्मेसँ बहुभाषिक माहौलमे जिवैत अछि आ एहि माहौलमे निहित लोकसर्जनाकेँ अपन स्वाभाविक बौद्धिक विकासक्रममे ग्रहण करैत अछि। आवश्यकता एहि बातक अछि हम शिक्षा-व्यवस्थामे भाषाक पढ़ाई आ माध्यम-भाषाक प्रश्नक संबंधमे व्याप्त जड़ताकेँ वृहत्तर परिप्रेक्ष्यमे राखी आ बूझी।

हमरा विश्वास अछि जे ई पोथी भाषा संबंधी नीति आ कार्यक्रमकेँ नया तरीकासँ जँचबा लेल एकटा आधार पत्रक भूमिका निमाहता। परिषद् दिसिसँ हम सभ प्रतिभागीक प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे 'समझ का माध्यम' गोष्ठी- शृंखलामे भाग लेलनि। गोष्ठीक चर्चाकेँ संग्रथित कए अथक परिश्रम संग पुस्तकक रूप देबा लेल हम भाषा विभागक डॉ. संध्या सिंह आ डॉ. कीर्ति कपूरक प्रति आभार व्यक्त करैत छी। हम भाषा विभागक अध्यक्ष प्रोफेसर रामजन्म शर्माक प्रति आभारी छी जे गोष्ठी-शृंखलाक कार्यक्रमक उत्साहपूर्वक प्रबंधन कएलनि । हमरा आशा अछि कि एहि पुस्तकक प्रचार-प्रसारसँ राज्य स्तरीय संस्था सभ भाषासँ जुड़ल प्रश्न पर गहन विचारक प्रेरणा पाओत।

नयी दिल्ली
4 मार्च 2010

कृष्ण कुमार
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्रस्तावना

भाषा हमरा लोकनिक जीवनमे अनिवार्य स्थान रखैत अछि। ई भाषे अछि जे संस्कृतिकें एकटा आकार दैत अछि। भाषा हमर सभहक अस्मिता आ परिचिति सेहो अछि। मातृभाषामे पढ़ौनी बच्चाक सामाजिक आ संज्ञानात्मक विकासकें समृद्ध करैत छैक।

‘समझ केर माध्यम’ नामक ई पुस्तक मूलतः 2008-2010 के बीचमे देशव्यापी चर्चाक आधार पर हिन्दीमे तैयार कराओल गेल छलै। आब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केर अनुशंसाकें समावेश करैत वर्तमानमे ई जरूरी अछि जे पूरा देशक शैक्षणिक संस्थान धरि ओहि ठामक अपन भाषामे ई पोथी सुलभ हो, ताहि लेल मूल रूपसँ हिन्दीमे तैयार एहि पोथीक अंग्रेजी सहित 23 भाषामे अनुवाद कएल गेल अछि। एहि माध्यमसँ ई पोथी सभ गोटे धरि पहुंचेबाक प्रयास भए रहल अछि। एहि प्रयासकें आगू बढ़ेबाक उद्देश्यसँ ई पोथी प्रकाशित कएल जा रहल अछि। पोथीक सामग्री चारि गोष्ठीमे उठल प्रश्न आ ओकर उत्तर तकबा लेल प्रयोग कएल गेल तर्क पर आधारित अछि।

हमरा विश्वास अछि जे ई पोथी भाषा सम्बन्धी नीति आ कार्यक्रमक पुनः परीक्षण लेल आधारपत्रक भूमिका निमाहत। परिषद् दिसिसँ हम ‘समझ केर माध्यम’ संगोष्ठी श्रृंखलामे भाग लेबय बला सभ प्रतिभागीक प्रति आभार व्यक्त करैत छी। हम विशेष रूपसँ एहि महत्वपूर्ण योजनाक प्रेरक तत्कालीन निर्देशक प्रोफेसर कृष्ण कुमार केर आभारी छी, जिनकर निर्देशनमे ई काज संभव भेल। आशा अछि जे एहि पोथीक प्रसारक कारणेँ राज्य स्तरीय संस्था सभकें भाषासँ जुड़ल प्रश्न पर गहराईसँ सोचबाक प्रेरणा भेटतै।

संध्या सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
भाषा शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान आ प्रशिक्षण परिषद

पुस्तक निर्माण समिति

लेखन एवं समन्वयन

संध्या सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.

सहयोग

कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.

अनुवाद

देवशंकर नवीन

- शिक्षाक माध्यम जँ मातृभाषा हो त' भाषिक आ सांस्कृतिक दूरीकें मेटएबामे मदति करता। बच्चा सभक घरक भाषा आ स्कूलक भाषाकें जोड़ब स्कूलक पहिल भूमिका हेबाक चाही।
- प्राथमिक शिक्षा एक अर्थे भाषा शिक्षण थिक, एते धरि जे गणित, पर्यावरण आ समाजक प्रारम्भिक जानकारी सेहो मातृभाषहिमे निकेनाँ हासिल कएल जा सकैत अछि।
- मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषामे शिक्षा सब स्तर पर जारी रहबाक चाही, कारण अइ भाषा सबमे क्षमताक विकाससँ बच्चा सभक मानसिक विकास आ सम्प्रेषणक समस्त माध्यम खुजल रहैत अछि, जाहिसँ आपसी सम्बन्ध स्वस्थ होइत अछि, संगहि अवधारणात्मक स्पष्टता सेहो बढ़ैत अछि।
- शुरुआती शिक्षाक माध्यम बच्चाक मातृभाषामे हो त' बच्चाक पूर्व जानकारी, ओकर भाषिक क्षमता आ मानसिक विकासक सही उपयोग भ' सकत।
- हरेक सम्भव प्रयास कएल जेबाक चाही जे बच्चाक घरक भाषा, आस-पासक वातावरणक भाषा आ स्कूलक भाषाक बीच एकटा जुड़ाव अथवा सेतु बनि सकए। एते धरि जे अंग्रेजी माध्यमक स्कूलमे सेहो बच्चाक मातृभाषाकें मध्यस्थ भाषाक रूपमे बढ़ावा भेटबाक चाही, जाहिसँ एक माध्यमसँ दोसर माध्यममे स्कूल बदलने बिना अबरजात भ' सकए।
- हरेक सम्भव प्रयास हेबाक चाही जे स्कूली शिक्षाक क्रममे बहुभाषी शिक्षाकें सेहो प्रोत्साहन भेटए।

– भारतीय भाषाक शिक्षण (आधार पत्र), एन.सी.ई.आर.टी

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर. टी., नयी दिल्ली-यूनीसेफ, पटना- आर.आई.ई., भुवनेश्वर- आर.आई.ई., मैसूर- आर.आई.ई., अजमेर- एस.सी.ई.आर.टी., पटना- विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसीक विषय.विशेषज्ञ लोकनिक आभारी अछि।

अनीता रामपाल, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-अरुण कमल, प्रोफेसर, पटना विश्वविद्यालय, पटना- रमाकान्त अग्निहोत्री, प्रोफेसर, भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली- रोहित धनकर, निदेशक, दिगन्तर, जयपुर- एच. के. दीवान, कार्यक्रम निदेशक, विद्या भवन सोसाइटी, राजस्थान- राजेश सचदेवा, प्रोफेसर, सी.आई.आई.एल, मैसूर-हसन वारिस, भूतपूर्व निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना-प्रियदर्शन, समाचार सम्पादक, एन.डी.टी.वी. इण्डिया, नयी दिल्ली-अवधेश प्रधान, प्रोफेसर हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-अहमद सज्जाद, भूतपूर्व प्रोफेसर, रांची विश्वविद्यालय, रांची-शुभा राव, संयोजक, महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-रियाज अहमद, उप.कुलपति, विद्या भवन सोसाइटी, राजस्थान-प्रेमपाल शर्मा, संयुक्त सचिव, रेल भवन, रेल मन्त्रालय, नयी दिल्ली-सदानन्द शाही, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, तपेन्दु इंस्टीट्यूट ऑफ़ हायर स्टडीज-एस. रघुनाथन, भूतपूर्व शिक्षा सचिव, दिल्ली सरकार-अपूर्वानन्द, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय-राजेश भूषण, सचिव, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पटना-शारदा कुमारी, वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-उषा शर्मा, रीडर, आर.आई.ई., अजमेर-नूतन झा, शिक्षक, मीराम्बिका विद्यालय, नयी दिल्ली-मणिन्द्र नाथ ठाकुर, एसोसिएट प्रोफेसर, जे.एन.यू.-प्रो. कृष्ण कुमार, निदेशक, एन.सी.ई.आर. टी., नयी दिल्ली-रामजन्म शर्मा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा विभाग, एन.सी. ई.आर. टी., नयी दिल्ली-ए.के. मिश्रा, प्रोफेसर, एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग-संध्या सिंह, रीडर, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-कीर्ति कपूर, वरिष्ठ प्रवक्ता, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्लीक प्रति परिषद् कृतज्ञता ज्ञापित करैत अछि।

परिषद् उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान तथा दिल्लीक शिक्षक, शिक्षक.प्रशिक्षक तथा पोथीक विकासक विभिन्न चरणमे सहयोग लेल रुचि सैनी आ नरेन्द्र वर्मा, डी.टी.पी. आपरेटर-राधा आ कॉपी एडीटर धनंजय सिंह तथा उपेन्द्र सिंह सत्यार्थी, परियोजना अध्येताक सेहो आभारी अछि।

परिवर्द्धित संस्करण

आभार

समन्वयन लेल डॉ. संध्या सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर. टी.; समीक्षा लेल डॉ. आभा झा, पीजीटी संस्कृत, सर्वोदय कन्या विद्यालय केर योगदान रहल अछि, जितिन कुमार, कनिष्ठ परियोजना अध्येताक सेहो आभारी अछि ।

विषय सूची

आमुख (परिवर्द्धित संस्करण)	iii
प्रथम संस्करण	v
प्रस्तावना	vii
1. शिक्षा सम्बन्धी दस्तावेजमे भाषा	1-10
➤ शिक्षा आयोगक रिपोर्ट: स्कूली पाठ्यचर्या-1964-66	
➤ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968	
➤ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986	
➤ क्रियान्वयन कार्यक्रम-1992	
➤ राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-1988, 2000	
➤ राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005	
➤ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020	
2. भाषा आ समझ	11-18
➤ बच्चाक समझ आ भाषा	
➤ अवबोध'क आधारक रूपमे भाषा	
➤ भाषा आ सामाजिक समता	
➤ बच्चाक अस्मिताक प्रश्न	
➤ सार्थक शिक्षाक प्रयास	
3. बहुभाषिकता	19-28
➤ बहुभाषिकताक उद्देश्य	
➤ बच्चाक भाषा क्षमता	
➤ सार्वभौमिक व्याकरणक परिकल्पना	
➤ बहुभाषिकता आ अल्पसंख्यक तथा आदिवासी भाषा	
➤ बहुभाषिकता आ दक्षिण भारतीय भाषा	

➤ बहुभाषिकता आ अंग्रेजीक कक्षा	
➤ बहुभाषिक कक्षा	
➤ बहुभाषिकताक चुनौती	
4. विषय सभहक केन्द्र मे भाषा	29-42
➤ इतिहासक झरोखामें	
➤ स'ब विषयक अध्यापक भाषाक अध्यापक छथि	
➤ चिन्तनक आजादी आ मौलिकताक प्रश्न	
➤ भाषा आ अन्य विषय	
➤ तकनीकी शब्दावली आ बच्चाक समझ	
➤ उच्च शिक्षा आ अन्य विषय	
5. भाषामे संवाद	43-48
(सन्दर्भ: अंग्रेजी आ हिन्दी)	
➤ अंग्रेजी आ हिन्दीक सम्बन्ध	
➤ सन् 1967क बाद	
➤ सन् 1987क दौर	
➤ परिवर्तनक नव पद्धति	
➤ अंग्रेजीक विकासक इतिहास	
➤ नव शब्द गढ़बाक प्रयोजन	
6. मुद्दा आ चुनौती	49-56
➤ शिक्षकक तैयारी	
➤ सामाजिक तैयारी	
➤ प्रशासनिक तैयारी	
परिशिष्ट - 1	57-58
संदर्भ	59-60

1

शिक्षा संबंधी दस्तावेजमे भाषा



- शिक्षा आयोगक रिपोर्ट: स्कूली पाठ्यचर्या-1964-66
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986
- क्रियान्वयन कार्यक्रम-1992
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-1988, 2000
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

हमरा लोकनिक दू टा ठोर अछि। दुनू मिलैत अछि। जीह'क संग मिलिकए एकटा लयमे संचालित होइत अछि त' भाषा बनैत अछि। जँ एकटा ठोर हिलए आ दोसर स्पन्दिते नईं होअए त' संवाद असम्भव हएत (भाषा पर एक कविक दृष्टि)। सन् 1971क गणनाक अनुसारें हमरा लोकनिक देशमे लगाति 1652 भाषा अछि। ओहिमे 47 गोटा भाषा मात्र स्कूलमे बच्चाक अवबोध'क माध्यम बनि सकल अछि (स्रोत: भारतीय भाषाओं का शिक्षण-2005)। शेष सब एखनहुँ चुप्प अछि। सम्भवत: आइ अइमेसँ बहुत-रास भाषाक अस्तित्व नईं रहल हएत। त' की ई चुप्पी किछु भाषा मात्रक माध्यम नईं बनि सकबाक चुप्पी थिक? आ कि ई चुप्पी कैकटा संस्कृतिक, कैकटा समाजक, कैकटा भाषाक आ कोटिश: बच्चाक सदा-सर्वदा लेल चुप्प भ' जेबाक इशारा थिक--सोचए पड़त।

हमरा लोकनिकें सोचए पड़त जे कोनो भाषा अपन सहयोगी भाषाक संगहि विकसित होइत अछि। एखन मात्र हिन्दीएक ग'प करी त' हमरा लोकनिकें इहो सोचए पड़त जे हिन्दी अनेक क्षेत्रीय भाषासँ मिलिकए बनल अछि। समस्त सहयोगी भाषाक संग चहचहाइत, डेग बढ़बैत भाषामे रचल-बसल बच्चा सबकें ओकर अप्पन भाखामे सुनए पड़त। हमरा लोकनिक बहुत-रास निष्पन्द भाषा प्रतीक्षामे अछि, कोनो एहन प्रयासक प्रतीक्षामे, जखन दुनू ठोर मिलए (बच्चाक समझ आ भाषाक तालमेल हो) आ भाषामे जनतान्त्रिक वातावरण बनए।

स्वातंत्र्योत्तर कालक शिक्षा सम्बन्धी पछिला समस्त दस्तावेजमे मातृभाषाकें

अवबोध'क माध्यम (खास क' प्राथमिक शिक्षा)क रूपमे लागू कएल जेबाक बात कहल गेल आ बच्चाक समझ लेल सहायक ओकर अप्पन भाषा, ओकर स्वतन्त्र अभिव्यक्तिकें महत्त्व देल गेल। विभिन्न दस्तावेजमे देल गेल भाषा सम्बन्धी सुझाव निम्नलिखित अछि:

शिक्षा आयोगक रिपोर्ट: स्कूली पाठ्यचर्या-1964-66

आइ हमरा लोकनिकें प्राथमिक शिक्षामे जाहि आधारभूत प्रश्नक समाधान करबाक अछि, से थिक—मातृभाषामे नीक जकाँ पढ़ाएब आ निरक्षरता समाप्त करबा। उद्योगक दृष्टिसँ समस्त उन्नत देशहुमे, पहिने प्राथमिक शिक्षाक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम मात्र एक भाषाक अध्ययन पर आधारित रहै छल। शिक्षाक विकास आ आर्थिक स्थितिमे समृद्धि अएलाक बादे, ओ लोकनि प्राथमिक अवस्थामे दोसर भाषा शुरुह केलनि।

हमरा लोकनिक विश्वास अछि जे अंग्रेजी सन विदेशी भाषा सीख'सँ पहिने मातृभाषा पर पर्याप्त अधिकार प्राप्त क' लेबाक चाही। तकर अलावा अवर प्राथमिक कक्षा सबमे, जाहिमे लाखक लाख छात्र-छात्रा लोकनिक नामांकन होइत अछि, अंग्रेजीक प्रभावी शिक्षण लेल पैघ संख्यामे प्रशिक्षित अध्यापकक आवश्यकता हएत—मुदा से उपलब्ध नई अछि। जँ से उपलब्ध भ'ओ जाए, तइयो अइ कार्यक्रमसँ शिक्षा लेल नियत कएल गेल निधि पर अत्यधिक बोझ पड़त। हमरा बुझने, ई बहुत पैघ कार्य थिक आ व्यर्थमे एकरा पाछू पड़लासँ स्कूली अवस्थामे अंग्रेजीक स्तर उन्नत हेबाक बदला अवनत भ' जाएत। तँ हम अनुशंसा करैत छी जे विदेशी भाषाक रूपमे अंग्रेजीक अध्ययन किछुएक स्कूलमे प्रायोगिक आधार पर शुरुह करबाक अतिरिक्त, पाँचम कक्षासँ पहिने शुरुह नई हेबाक चाही।

— शिक्षा आयोगक रिपोर्ट, 1964-66, पृष्ठ 218-219

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968

भारतीय भाषा आ साहित्यक समुचित विकास आ शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास एक दोसर पर आश्रित अछि। एकर अभावमे लोकक सृजनात्मक ऊर्जाक विकास नई भ' सकत, शिक्षाक स्तरमे वृद्धि नई हएत, ज्ञानक पहुँच लोक धरि नई हएत—पढ़ल-लिखल आ आम जनताक बीचक खाधि अहिना बनल रहत—भने बढ़ए नई, मुदा कम त' नई हएत। कैक भाषा पहिनहिसँ शिक्षाक माध्यमक रूपमे प्राथमिक आ माध्यमिक स्तर पर

प्रयोगमे अछि। उच्च शिक्षामे सेहो एकरा लागू कएल जेबाक प्रयोजन अछि।

हिन्दी: हिन्दीक विकास लेल हरेक सम्भव प्रयास कएल जेबाक चाही। धारा 351कें ध्यानमे रखैत सम्पर्क भाषाक रूपमे तथा भारतक सामूहिक संस्कृतिक अभिव्यक्तिक माध्यमक रूपमे हिन्दीकें विकसित करबाक प्रयोजन अछि। हिन्दीतर प्रदेशमे जतए कतहु उच्च शिक्षा लेल हिन्दीकें शिक्षाक माध्यम बनाओल जा रहल अछि, तकरा प्रोत्साहन देल जेबाक चाही। (नोट: ई बात समस्त भारतीय भाषाक सन्दर्भमे लागू भ' सकैत अछि।)

अन्तरराष्ट्रीय भाषा: अंग्रेजी आ अन्य अन्तरराष्ट्रीय भाषाक पढ़ाइ पर विशेष ध्यान देबाक प्रयोजन अछि। विशेष रूपसँ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे विश्वक ज्ञान लगातार बढ़ि रहल अछि, अइ विकासक संग भारतकें ने केवल संग-संग चलबाक अछि, बल्कि ओइ विकासमे महत्त्वपूर्ण योगदान सेहो देबाक अछि। अइ उद्देश्य लेल अंग्रेजीक ज्ञानकें विशेष रूपसँ मजगूत करए पड़त।

— राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968, पृष्ठ 3-4

त्रिभाषा सूत्रक बात सेहो सन् 1968क नीतिमे बलपूर्वक कहल गेल, जे राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा (2005)मे अइ प्रकारें राखल गेल अछि—

• **प्रथम भाषा**

— स्कूलमे पहिल भाषा जे पढ़ाओल जाए से मातृभाषा हो अथवा क्षेत्रीय भाषा।

• **द्वितीय भाषा**

— हिन्दी भाषी राज्यमे द्वितीय भाषा कोनो अन्य आधुनिक भाषा अथवा अंग्रेजी हो, आओर

— हिन्दीतर भाषाभाषी राज्यमे द्वितीय भाषा हिन्दी अथवा अंग्रेजी हएत।

• **तृतीय भाषा**

— हिन्दी भाषी राज्यमे तृतीय भाषा अंग्रेजी हएत अथवा कोनो एकटा आधुनिक भारतीय भाषा, जे द्वितीय भाषाक रूपमे नईँ पढ़ल जा रहल हो।

— हिन्दीतर भाषाभाषी राज्यमे तृतीय भाषा अंग्रेजी हएत अथवा कोनो एकटा आधुनिक भारतीय भाषा जे द्वितीय भाषाक रूपमे नईँ पढ़ल जा रहल हो।

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण—आधार पत्र, पृष्ठ 13

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986

सन् 1986क शिक्षा नीतिमे सन् 1968क शिक्षा नीतिक आधार पर भाषा शिक्षा सम्बन्धी प्रकरण पर चर्चा भेल अछि। ईहो नीति उच्च शिक्षाक स्तर पर माध्यम भाषाक रूपमे क्षेत्रीय भाषाक उपयोग पर जोर दैत अछि, त्रिभाषा सूत्रकेँ पुरजोर पद्धतिसँ लागू कएल जाए, शिक्षामे हरेक स्तर पर बच्चाक भाषिक विकास पर ध्यान देल जाए। अंग्रेजी आ अन्य विदेशी भाषाक पढ़ाइक सुविधा उपलब्ध कराओल जाए, सम्पर्क भाषाक रूपमे हिन्दीकेँ विकसित कएल जाए, जेना कि संविधानक धारा 351मे निहित अछि-एक भाषासँ दोसर भाषामे किताबक अनुवाद तथा द्विभाषी आ बहुभाषी शब्दकोश सब पर गम्भीरतासँ काज कएल जेबाक प्रयोजन अछि।

— क्रियान्वयन कार्यक्रम-1992, पृष्ठ 94

सन् 1986क नीति क्रियान्वयनक सुझावमे भारतीय भाषा सभक विकाससँ सम्बन्धित किछु महत्त्वपूर्ण सुझाव अछि।

- आधुनिक भारतीय भाषा सबमे पाठ्यसामग्री/सन्दर्भ ग्रन्थ तैयार क' क' प्रकाशित कराओल जाए।
- विश्वविद्यालयक प्राध्यापक लोकनिक अभिमुखीकरण कएल जाए।
- पाठ्यपुस्तक आ सन्दर्भ ग्रन्थक अनुवाद अंग्रेजीसँ भारतीय भाषा सबमे कएल जाए। कएल जाइवला काजक निरन्तर मॉनीटरिंग हो।

अवबोध'क माध्यमक दृष्टिएँ सेहो ई समस्त सुझाव ध्यातव्य अछि—

पटनायक-1986 (अ)

- स्कूली शिक्षामे माध्यमिक अथवा उच्चतर स्तर पर शिक्षाक माध्यम, क्रमे-क्रमे क्षेत्रीय भाषा अथवा राज्य स्तरीय भाषा अथवा हिन्दी अथवा अंग्रेजी भ' सकैत अछि।
- हमरा अनुसारें प्राथमिक शिक्षा मुख्यतः भाषा-शिक्षा थिक, तें मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा सेहो अनिवार्य विषयक रूपमे पढ़ाओल जेबाक चाही।
- मनुष्यमे भाषा सीखबाक असीम क्षमता होइत अछि, खास क' जखन ओ कम उम्रमे रहैत अछि। पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो त' प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजीओ पढ़ाओल जा सकैत अछि। मात्र किछुए बर्ख धरि अंग्रेजीक शिक्षण पर जोर द' क' अपेक्षित परिणाम प्राप्त नइँ कएल जा सकैए। सामान्य मतक विपरीत, भाषा एक दोसराक संगहि विकास करैत अछि।

- स्पष्टअछि जे त्रिभाषा सूत्रमे तीन भाषा न्यूनतम अछि। ई अइ सूत्रक ऊपरी सीमा नई थिक। संस्कृतकेँ आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे पढ़ल जेबाक चाही, जतए एकर प्रकृति शास्त्रीय संस्कृतसँ बहुत भिन्न हेबाक चाही।
- शास्त्रीय (अभिजात) आ विदेशी भाषा अपना-अपना तरहें पढ़ल जेबाक चाही। अइसँ व्याकरणिक जटिलताकेँ बुझबाक अवसरक संगहि ओहि परम्परा, संस्कृति आ लोक सब धरि पहुँच'मे मदति भेटैत अछि, जे हमरा लोकनिक पहुँचसँ बाहर अछि।

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण—आधार पत्र, पृष्ठ 16

क्रियान्वयन कार्यक्रम-1992

व्यावहारिक त्रिभाषा-सूत्रक आधार

व्यावहारिक त्रिभाषा-सूत्रक निर्माणमे निम्नलिखित मार्गदर्शी सिद्धान्तसँ सहायता भेटि सकैत अछि —

- जा धरि विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षाक मुख्य माध्यम आ केन्द्र तथा अनेक राज्यमे प्रशासनक भाषा अंग्रेजी बनल रहत, ता धरि ओकरहि ऊँच स्थान भेटैत रहत। विश्वविद्यालयमे उच्चतर शिक्षाक माध्यम प्रान्तीय भाषा बनि गेलाक बादहु सब छात्र-छात्र लेल अंग्रेजीक व्यावहारिक ज्ञान बहुते उपयोगी हएत आ विश्वविद्यालयमे प्रवेश लेनिहार लेल ओकर सुयोग्य हएब आवश्यक हएत।
- स्कूलमे कोनो भाषाक अध्ययनमे कतबा योग्यता प्राप्त कएल जा सकैत अछि, से मात्र अही पर निर्भर नई अछि जे कोनो भाषा कतेक बर्ष धरि सीखल जाइत अछि, अपितु अहू पर निर्भर अछि जे छात्रक सोझाँ केहन अभिप्रेरणा अछि, भाषा कोन अवस्थामे सीखल जा रहल अछि, तथा उपलब्ध शिक्षक आ उपागम आ शिक्षण-पद्धति कोन प्रकारक अछि। उचित सुविधाक अभावमे दीर्घ अवधि धरि भाषा पढ़ेनहुँसँ नीक परिणाम नई निकलैत अछि, जखन कि अनुकूल परिस्थितिमे कमो समयमे नीक परिणाम निकलि सकैत अछि। यद्यपि अल्पायुअहिमे बच्चाकेँ दोसर भाषा सिखएबाक पक्षमे तर्क देल जा सकैत अछि, मुदा हमरा विचारें प्राथमिक स्कूलमे कोटिशः छात्रकेँ भाषाक शिक्षा दै लेल योग्य शिक्षकक व्यवस्था करब बहुत कठिन काज हएत।
- हिन्दी अथवा अंग्रेजीकेँ दोसर भाषाक रूपमे अनिवार्यतः कोन अवस्थासँ शुरू कएल जाए आ कतेक अवधि धरि सिखाओल जाए— ई बात स्थानीय अभिप्रेरणा

आ आवश्यकता पर निर्भर करैत अछि, आ एकरा प्रत्येक राज्यक विवेक पर छोड़ि देल जेबाक चाही।

- कोनहुँ अवस्थामे चारि भाषाक अध्ययन अनिवार्य नईं हेबाक चाही, मुदा स्वेच्छासँ चारि अथवा आओरो अधिक भाषाक अध्ययनक सुविधा उपलब्ध हेबाक चाही।

— क्रियान्वयन कार्यक्रम-1992

राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-1988, 2000

सन् 1988 आ 2000क राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखामे प्रस्ताव देल गेल अछि जे 'स्कूली शिक्षाक क्रममे सब स्तर पर अथवा कमसँ कम आरम्भिक स्तर धरि शिक्षाक माध्यम मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा हेबाक चाही' (एन-सी-एफ-एस-ई--2000)। मुदा एतए मातृभाषा आ क्षेत्रीय भाषाक बीच उपस्थित अन्तरक गम्भीर समस्याक उपेक्षा कएल गेल अछि। अइ रूपरेखामे कहल गेल अछि जे जँ क्षेत्रीय भाषा विद्यार्थीक मातृभाषा नईं थिक, त' प्रथम दू बर्ख धरि ओकर शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे भ' सकैत अछि। तेसर कक्षा आ तकर बादसँ 'क्षेत्रीय भाषाकें माध्यम भाषाक रूपमे अपनाओल जा सकैत अछि।' (एन-सी-एफ-एस-ई--2000)।

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण-आधार पत्र, पृष्ठ 15-16

राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005

आइ हम निश्चित रूपेँ जनै छी जे द्विभाषिकता अथवा बहुभाषिकतासँ निश्चित संज्ञानात्मक लाभ होइत अछि। त्रिभाषा-सूत्र भारतक भाषा-स्थितिक चुनौती आ अवसरसँ संवाद करबाक एकटा प्रयास थिक। ई एकटा रणनीति थिक, जकरा कैक भाषा सिखबाक मार्ग प्रशस्त करबाक चाही। एकरा कार्य आ भाव दुन्नू रूपमे अपनएबाक आवश्यकता अछि। एकर प्राथमिक उद्देश्य भारतमे बहुभाषिकता आ राष्ट्रीय सद्भावक प्रसार अछि। अइ लक्ष्यक प्राप्तिके निम्नलिखित दिशा-निर्देश सहायक भ' सकैत अछि-

- भाषा शिक्षण बहुभाषिक हेबाक चाही, से ने केवल कैक भाषाक शिक्षणक अर्थमे बल्कि रणनीति तैयार करबाक लेल सेहो, जाहिसँ बहुभाषिक कक्षाकें संसाधनक रूपमे प्रयोगमे आनल जाए।
- स्कूलमे शिक्षणक माध्यम बच्चाक घरेलू भाषा (भाषा समूह) हेबाक चाही, जेना कि 3-1 मे परिभाषित कएल गेल अछि।

- जँ स्कूलमे उच्चतर स्तर पर शिक्षा, बच्चाक घरेलू भाषाक माध्यमे देल जाएबाक सुविधा उपलब्ध नई हो, त' प्राथमिक स्तरक शिक्षा घरेलू भाषाक माध्यमे उपलब्ध कराओल जाए। संगहि इहो आवश्यक अछि जे बच्चाक घरेलू भाषाकेँ हमरा लोकनि सम्मान दी। हमरा लोकनिक संविधानक धारा 350 'क' के अनुसार 'प्रत्येक राज्य आ राज्यक भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषायी अल्पसंख्यक-वर्गक बालककेँ शिक्षाक प्राथमिक स्तर पर मातृभाषामे शिक्षाक पर्याप्त सुविधाक व्यवस्था करबाक प्रयास करता'।

— राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005, पृष्ठ 42

तेँ राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा (2005) लेल निर्मित फोकस समूह 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण'मे सुझाव दैत अछि--विद्यालय स्तर पर विशेष क' प्राथमिक स्तरक शिक्षामे अनुदेशक माध्यम मातृभाषा मात्र हेबाक चाही। सन् 1986मे एन-सी-ई-आर-टी- द्वारा भाषाक अध्ययन लेल गठित समिति सुझाव देने छल जे आरम्भिक शिक्षामे माध्यमक रूपमे मातृभाषा मात्र प्रयुक्त हेबाक चाही। भारतीय सन्दर्भमे ई अत्यन्त आवश्यक भ' जाइत अछि, किऐक तँ —

- ई लोककेँ राष्ट्रीय पुनर्निर्माणमे भागीदारी योग्य बनबैत अछि
- अत्यल्प आभिजात्यक चाँगुरसँ ज्ञानकेँ मुक्त करैत अछि
- परस्पर सहयोगी आ परस्पर निर्भर समाजक निर्माणमे सहायक होइत अछि
- बेसीसँ बेसी लोककेँ अपन मत रखबाक अवसर प्रदान करैत अछि आ तेँ जनतन्त्रकेँ बेहतर सुरक्षाक आधार देबामे कारगर सिद्ध होइत अछि
- सूचनाक विकेन्द्रीकरणक बाट खोलैत अछि आ नियन्त्रित मीडियाक बदला स्वतन्त्र मीडियाक विकासमे सहयोगीक भूमिका निमाहैत अछि, संगहि बेसीसँ बेसी लोककेँ शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास लेल सेहो अवसर प्रदान करैत अछि

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण-आधार पत्र, पृष्ठ 14-15

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

- ई सर्वविदित अछि जे छोट बच्चा अपना घरक भाषा/मातृभाषामे सार्थक अवधारणाकेँ बेसी शीघ्रतासँ सीखैत अछि आ बूझि जाइत अछि। घरक भाषा बेसी काल मातृभाषा अथवा स्थानीय समुदाय द्वारा बाजल जाइवला भाषा होइत अछि। ओना, कतेको बेर

बहुभाषी परिवार सभमे, परिवारक अन्य सदस्य द्वारा बाजल गेल भाषा एकटा घरेलू भाषा भ' सकैत अछि, जे कौखन मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषासँ भिन्नो भ' सकैत अछि। जहाँ धरि सम्भव भ' हो, कम-सँ-कम कक्षा-5 धरि, मुदा बेसी नीक होएत जे कक्षा-8 आ ताहूसँ आगू धरि, शिक्षाक माध्यम, घरक भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा हएत। एकर बाद, जहाँ धरि सम्भव हो, घरेलू/स्थानीय भाषा, भाषाक रूपमे पढ़ाओल जाएत रहत। सार्वजनिक आ निजी, दुनू तरहक विद्यालय एकर अनुपालन करत।

- जेना कि अनुसन्धान स्पष्टरूपसँ देखबैत अछि जे 2 सँ 8 बरखक बीच बच्चा शीघ्रतासँ भाषा सीखैत अछि आ बहुभाषिकतासँ एहि बएसक विद्यार्थीकेँ बहुत बेसी संज्ञानात्मक लाभ होइ छै, बुनियादी स्तरसँ शुरुआत आ तकर बादहिसँ बच्चा सभकेँ विभिन्न भाषामे (मुदा मातृभाषा पर विशेष जोर दैत) अवसर देल जाएत। सभ भाषा मनोरंजक आ संवादात्मक शैलीमे पढ़ाओल जाएत, जाहिमे बहुत रास संवादात्मक गपशप होएत, आ प्रारम्भिक वर्षमे पढ़लाक बाद मातृभाषामे लिखबाक संग-संग कक्षा-3 आ आगूक कक्षामे सेहो, अन्य भाषामे पढ़बा-लिखबाक कौशल विकसित कएल जाएत।
- अइ सम्बन्धमे उच्चतर गुणवत्ताक द्विभाषी पाठ्यपुस्तक आ शिक्षण-अधिगमक सामग्री विज्ञान आ गणित विषयमे तैयार करबाक सभ प्रयास कएल जाएत, जाहिसँ विद्यार्थी दुनू विषयमे सोचबा-बजबा लेल अपन घरक भाषा/मातृभाषा आ अंग्रेजी दुनूमे सक्षम भ' सकत।
- भारतीय भाषाक शिक्षण आ अधिगमकेँ विद्यालय आ उच्चर शिक्षाक प्रत्येक स्तरक संग एकीकृत करबाक प्रयोजन अछि। भाषा प्रासंगिक आ जीवन्त बनल रहए, तै लेल अइ भाषा सभमे उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम आ मुद्रित सामग्रीक सतत प्रवाह बनल रहबाक चाही--अइमे पाठ्य-पुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, वीडियो, नाटक, कविता, उपन्यास, पत्रिका आदि सम्मिलित अछि। भाषा सभक शब्दकोष आ शब्द भण्डार निरन्तर आधिकारिक रूपेँ अद्यतन होइत रहबाक चाही आ ओकर व्यापक प्रसार सेहो करबाक चाही, जाहिसँ एहि भाषा सभमे समसामयिक मामिला आ अवधारणा पर चर्चा कएल जा सकए। दुनिया भरिक देशमे--अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिब्रू, कोरियाई, जापानी, आदि भाषामे एहि प्रकारक अधिगम सामग्री, मुद्रित सामग्री तैयार होइत अछि आ दुनिया भरिक भाषा सभक महत्वपूर्ण सामग्रीक अनुवाद कएल जाएत अछि।

आ शब्द-भण्डारकेँ निरन्तर अद्यतन कएल जाएत अछि। मुदा, अपन भाषाकेँ जीवन्त आ प्रासंगिक बनौने रखबामे मदति लेल एहन अधिगम सामग्री, मुद्रित सामग्री आ शब्दकोष तैयार करबाक मामिलामे भारतक गति बहुत मन्द रहल अछि।

- भारतीय भाषाक संवर्द्धन आ प्रसार तखनहि सम्भव अछि, जखन ओकरा नियमित रूपेँ प्रयुक्तिमे राखल जाए आ शिक्षण-अधिगम लेल ओकर उपयोग कएल जाए। भारतीय भाषा सभमे विभिन्न श्रेणीक उत्कृष्ट कविता आ गद्य लेल पुरस्कारक स्थापना क' कए प्रोत्साहनक पहल कएल जाएत, जाहिसँ समस्त भारतीय भाषामे जीवन्त कविता, उपन्यास, पाठ्य-पुस्तक, कथेतर साहित्यक रचना आ पत्रकारिता सन-सन अन्यान्य काज सुनिश्चित कएल जा सकए। भारतीय भाषा सभमे प्रवीणताकेँ रोजगारक योग्यताक मानदण्डक एकटा हिस्साक रूपमे सम्मिलित कएल जाएत।

— राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, मानव संसाधन विकास मन्त्रलय, भारत सरकार

- दस्तावेज आ शोधक अइ समस्त सुझावक अछैत आइ लगाति 75 बर्खक बादहु एहेन पूरापूरी नई भ' सकल अछि। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कएल गेल भाषा सम्बन्धी दू टा शोध (द्रष्टव्य, पृ- 46-48)मे सेहो माध्यम भाषाक जे राज्यवार रूपरेखा प्रस्तुत कएल गेल अछि, तइमे अधिकांश राज्यमे बहुत-रास भाषा माध्यम भाषाक रूपमे प्रयोग कएल जा रहल अछि। कागज पर त' माध्यम भाषाकेँ ल' क' ई समस्त संस्तुति आ रूपरेखा उत्साहित करैत अछि, मुदा ई घरक भाषा आ स्कूलक भाषाक अन्तरकेँ एखनहुँ मेटा नई सकल अछि। दिनानुदिन एक दिसि घरक भाषा आ स्कूलक भाषामे अन्तर बढ़ैत गेल त' दोसर दिसि अंग्रेजी सहित भारतीय भाषा सभक बीच संवाद सेहो टूटल। मानसिक बोझ अइ तरहेँ बढ़ल जे बच्चाक अपन समझ, अपन अभिव्यक्ति कतहु दबि कए रहि गेल। तें राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा (2005)मे अइ बातकेँ फेरसँ बलपूर्वक कहबाक प्रयोजन अछि जे बच्चाक घरक भाषा स्कूलहुमे ओकर अवबोध'क माध्यम बनए, ताकि बच्चा रट्टा मारैक बदला नीक जकाँ बूझि क' पढ़बाक दिशामे आगू बढ़ए। शिक्षा ओकरा लेल बोझ नई बनिकए एकटा आनन्ददायी अनुभव बनए। स्पष्टअछि जे अइ पाछू किछु भ्रम आ बहुत-रास ओझराहटि अछि।
- अही सब बातकेँ ध्यानमे रखैत एन.सी.ई.आर.टी.क भाषा विभाग एकटा प्रयास आ देश भरिक शिक्षाविद एवं अध्यापक लोकनिक संग मिलिकए एकटा बहस चलौलक अछि। ई बहस पटना, वाराणसी, उदयपुर आ दिल्लीमे एकटा परिसंवाद-शृंखलाक रूपमे आयोजित भेल, जाहिमे बच्चाक अपनहि भाषा ओकर अवबोध'क

माध्यम बनए, अइ बात पर सबहक सहमति बनल। मुदा सबसँ पैघ समस्या एकर क्रियान्वयनक अछि। अइ गोष्ठी सबसँ छनिकए इहो बात सोझाँ आएल जे अइ दिशामे एकटा व्यापक तैयारीक प्रयोजन हएत। ने केवल अकादेमिक बल्कि सामाजिक आ प्रशासनिक भूमिकाकेँ ल' क' सेहो एकटा सचेत तैयारी करए पड़त आ अवबोध'क माध्यम सम्बन्धी धारणा बनएबामे एकटा क्रियात्मक पहल करए पड़त।

2

भाषा आ समझ

- बच्चाक समझ आ भाषा
- अवबोध'क आधारक रूपमे भाषा
- भाषा आ सामाजिक समता
- बच्चाक अस्मिताक प्रश्न
- सार्थक शिक्षाक प्रयास



सार्थक शिक्षाक प्रयास भाषा-भाषासँ अवबोध'क सम्बन्ध गहन अछि, मुदा शिक्षामे समझक प्रयोजन लगभग नकारि देल गेल छल। विगत बर्खादिमे शिक्षा

सम्बन्धी जे नव नीति बनल, से पहिल बेर शिक्षामे समझ पर बल देबाक बात कहि रहल अछि। अइसँ पहिने, समझ की थिक? तकरो कोनो समझ नईं बनि पाबि रहल छल; ज्ञान देबाक आ ग्रहण करबाक परम्परा चलि रहल छल। बहुत किछु आइयो चलि रहल अछि। बच्चाक भाषा की थिक? सबसँ पहिने हमरा लोकनिकें अइ विषयमे अपन समझ दिढ़ करए पड़त —

बच्चाक समझ आ भाषा

- विद्यालय अएबासँ पहिने, भाषाक माध्यमहिसँ बच्चा सभ दुनियाकें अकानैत रहैत अछि।
- बच्चा भाषा सीखैत नईं अछि, बल्कि दिमागमे रचैत अछि।
- बच्चा सभमे समझ बनएबाक क्षमता रहैत अछि, ओ स्वयं समझ बनबितो अछि।
- ओकर आस-पास कैकटा भाषाक हएब कोनो समस्या नईं, संसाधन थिका शिक्षामे समता का काज कैकटा भाषा क' सकैत अछि।
- पाठ्यचर्या आ भाषा जखन निजी जीवनसँ जुड़ैत अछि त' ओ आओर बेसी समृद्ध होइत अछि।
- छह बर्खक कोनो बच्चाक भाषा सेहो अत्यन्त जटिल भ' सकैत अछि। ओकरा दिमागमे भाषाक एहेन व्याकरण होइत अछि जाहिसँ ओ सब किछु अभिव्यक्त क' सकैत अछि। जँ ओकरा पर माध्यमक रूपमे आन भाषा थोपल जाएत, त' ओकर समझ सशक्त नईं हएत।

चॉम्स्की (1959)क 'रिव्यू ऑफ स्किनर्स वर्बल बिहेवियर' त' व्यवहारवादक जैडियहिकें हिला क' राखि देलक। चॉम्स्की तर्क दैत कहलनि जे भाषिक क्षमता जन्मजाते होइत अछि, बल्कि भाषिक व्यवस्था लेल सीखबाक प्रक्रिया सम्भवे नई भ' सकैत अछि। मुदा पियाजे (1962-1983 आनहुँ कतोकमे सँ) इनहेल्डर आ पियाजे (1958) आ व्योगोत्स्की (1978, 1986) सन-सन मनोवैज्ञानिक लोकनि अइ दुनू अतिवादी दृष्टिकोणक मध्यवर्ती बाट अपनौलनि। जतए व्यवहारवादी लोकनि लेल मस्तिष्क एकटा 'अखरा सिलेट' छल, ओतहि संज्ञानात्मक रुखि रखनिहार (चॉम्स्की आदि) लेल भाषा मानव-मस्तिष्कमे पहिनहिसँ विद्यमान छल, सार्वभौम व्याकरणक रूपमे बुनल। पियाजेक अनुसार भाषा अन्य संज्ञानात्मक तन्त्र जकाँ परिवेशक अन्तःक्रियाक माध्यमहिसँ विकसित होइत अछि।

– भारतीय भाषाओं का शिक्षण-आधार पत्र, पृष्ठ 8

अवबोध'क आधारक रूपमे भाषा

समझ आ भाषाक सम्बन्ध किछु एहेन होइत अछि जेना बसात आ ओकर तरंगा हमरा लोकनिक समझ अपनहि भाषामे बनैत अछि। भाषाक बिना समझक परिकल्पना असम्भव अछि। मुदा स्कूलमे भाषाक उपयोग एकटा 'उपकरण' जकाँ कएल जा रहल अछि। हमरा लोकनिकें अइ दिशामे एखन काज करए पड़त आ विश्वास दिआब' पड़त जे भाषा मानवीय अवबोध'क एक मात्र अनिवार्य आधार थिक। एखन हम की क' रहल छी? अहू मादे हमरा लोकनिकें भाषा मात्र सचेत करैत अछि। ई वर्तमानसँ अतीत आ भविष्यमे अबरजातक एक मात्र अनिवार्य उपकरण थिक। काल्हि की छल? तही आधार पर कल्पना कएल जा सकैत अछि जे हमरा लोकनिकें आओर की चाही? अपना विषयमे विवेकपूर्ण ढंगसँ निर्णय करबाक काज भाषा मात्र करैत अछि। मनुष्यक ई सब अवस्था अपनहि परिवेशमे रचल जाइत अछि आ अइ रचावक काज समझे द्वारा सम्भव अछि। मनुष्यकें ई समझ भाषा मात्रहिसँ बनैत अछि। भाषा मात्रहिसँ हमरा लोकनि सार्थक अवधारणा बनबैत छी, सम्बन्धक संजाल बनबैत छी, अपन अनुभवकें सार्थकता प्रदान करैत छी, अपन कामनाकें देखि पबै छी आ दोसरक कामनाकें बूझि पबै छी। तें मनुष्यकें गढ़बाक अनिवार्य शर्तक रूपमे भाषा अवबोध'क माध्यम बनैत अछि।

बच्चाक दिमागमे ओकर अप्पन भाषाक संरचना पहिनहिसँ रहैत अछि। अवधारणाक

ढाँचा अही भाषासँ बनैत अछि। जखन ओ कोनो नव चीज देखैत अछि, ओकर सम्बन्ध पहिनेक अनुभव- शृंखलासँ जुड़ैत अछि आ नव विशेषताक पता करैत अछि; तखन जाकए ओहि वस्तुक अवधारणा बनैत अछि। बच्चा जखन कनेक आओर पैघ होइत अछि, त' अपन चीन्हल-जानल वस्तु सभसँ अपरिचित वस्तु सभकेँ सम्बद्ध क' पबैत अछि, आ ओकरा मादे ग'प क' पबैत अछि। ई भाषा मात्रहिसँ सम्भव अछि। तेँ बच्चाक मोनमे पहिनहिसँ विद्यमान आनहु नव अवधारणाकेँ भिन्न-भिन्न परिस्थितिमे उपयोग करबाक अवसर देब' पड़त। तखन जाकए ओकर अपन समझ बनत।

एकटा बचिया उड़ैत मोरकेँ देखिकए कहैत अछि 'कागा' आ चलैत मोरकेँ देखिकए कहैत अछि 'भौं भौं'। अइमे डेढ़ बर्खक बचियाक अवधारणा विकसित भ' रहल अछि; अर्थात् ओकरा लेल उड़ै वला पक्षी अछि आ चलै वला पशु अछि। छह मासक बाद ओ देवाल पर जा रहल गिरगिटकेँ 'गिल्ली' कहैत अछि आ माइ जखन ओकरा 'कागा' कहै छै त' ओ चौकैत अछि। आब आओर बेसी अन्तर स्पष्ट भ' गेल अछि। ई ओकर सीखबाक आ समझ बनएबाक पद्धति थिक। कोनो चीजकेँ देखिकए बच्चा बरमहल पूछैत अछि -- 'ई की थिकै?' एतए ओ शब्द नई पूछैत अछि, बल्कि अवधारणाक मादे पूछैत अछि। बच्चा जे भाषा पहिने बाजब शुरुह केलक अछि, ओहीसँ ओ समझ बनबैत अछि, अर्थ निकालैत अछि, ओएह अर्थ ओकरा लेल अर्थवान होइत अछि, हमरा लोकनिकेँ ई बूझब जरूरी अछि।

— एक प्रतिभागी

भाषा आ सामाजिक समता

सामुदायिक जीवन, भाषा आ मनुष्य बहुत गहनतासँ एक दोसरासँ जुड़ल रहैत अछि आ सर्जनामे एकर बड़ पैघ भूमिका होइत अछि। बच्चा अपन अनुभवकेँ भाषाक माध्यमे संजोगि कए ओकरा अर्थवान बनबैत अछि। ई प्रक्रिया कोनो भाषा मात्रहिसँ होइत अछि आ ई भाषा बच्चाक घरक भाषा/मातृभाषा मात्र भ' सकैत अछि अर्थात् सर्जनाक पहिल प्रयास अपनहि भाषामे आरम्भ होइत अछि, कारण जे कोनो भावनात्मक आ अन्तरंग शब्द होइत अछि, से अपनहि भाषामे अबैत अछि।

बच्चा जखन पहिल बेर स्कूल अबैत अछि त' ओकरा ई सिखाओल जाइत अछि जे ओकरा अप्पन भाषामे नई बजबाक छै। ओकरा एकटा एहन भाषामे बजबाक छै जे

शिक्षक लोकनि द्वारा निर्धारित कएल गेल छै। ई ओ भाषा होइत अछि, जाहिमे ओ बच्चा एखन धारि ने सोचलक अछि आ ने बाजल अछि। एकर परिणाम बहुत घातक भ' सकैत अछि। हमरा लोकनिकें ध्यान देब' पड़त जे बच्चा मातृभाषा मात्रहिमे स्वयंके सृजित करैत अछि आ अपन अनुभवक व्याख्या सेहो ओही भाषामे करैत अछि। शिक्षामे एकरा नकारब ने केवल बच्चाके नकारब थिक बल्कि ई सामाजिक समता, सामाजिक न्याय आ अजादीके नकारब थिका। ई प्रवृत्ति 'चुप्पीक संस्कृति'क संग-संग एकटा आक्रामक समाजके जन्म द' सकैत अछि। किऐक तँ शब्दक माध्यमे जखन अभिव्यक्ति नईं होएत, त' ओ कैक टा अन्यान्य बाट खोलि सकैत अछि। सहिष्णुताक भाव अनबा लेल सेहो, बच्चाके अपन भाषामे सोचबाक, विचारबाक आ पढ़बा-लिखबाक अवसर देब' पड़त। ई अकारण नईं अछि जे गाँधी जी आइसँ शताधिक बर्ष पूर्वहि (सन् 1909मे) 'हिन्द स्वराज' अपन मातृभाषा गुजरातीमे लिखलनि, अंग्रेजीमे नईं।

हमरा लोकनिक शिक्षा पद्धति किछु लोकक भाषाके स्वीकार करैत अछि त' किछु लोकक भाषाके नकरैत अछि। ई नकार शिक्षा पएबाक उपकरण अथवा ज्ञान प्राप्त करबाक एकमात्र साधनक नकार थिका। हमरा लोकनिकें अहू पर ध्यान देब' पड़त जे न'ब मशीन बनाएब, न'ब शोध करब, अपन आ समाजक मादे न'ब ढंगें सोचब, तखनहिं सम्भव हएत, जखन हम अप्पन भाषामे सोचि पाएब। आ ई तखन सम्भव हएत जखन हरेक स्कूल भाषा शिक्षाके तरल (लचीला) बनाबए।

बच्चाक अस्मिताक प्रश्न

दू टा एहेन स्कूलक कल्पना करू, जकर अपन-अपन भाषा-नीति अछि-एकटा ओ स्कूल अछि जतए बच्चा स्कूल अबैत अछि त' ओकर अपन भाषा, खाहे ओ जनजातीय भाषा हो आ कि ओकर घरक अपन भाषा-ओकरा खूब सहजता आ सम्मानसँ कक्षामे स्वीकार कएल जाइत अछि। ओ अपन भाषामे जेना बजैत हो, ओकरा गलत नईं कहल जाइत हो आ ने ओकरा 'गँवारू' कहल जाइत हो; अपन भाषामे ओ अपन पिताके, दादाके अथवा कोनहुँ टा पैघके 'तों' कहैत हो; एते धरि जे शिक्षकहुके 'तों' कहैत हो; त' ओकरा अपमानित नईं कएल जाइत हो, ओकरा 'गँवारू' कहिकए बैसा नईं देल जाइत हो। ई स्कूल अइ बच्चाके नहुएँ-नहुएँ बृहत्तर दुनिया आ ज्ञानसँ जोड़बा लेल क्षेत्रीय भाषा दिश अनबाक प्रयास करैत हो; ई काज ओकर आत्मगौरव आ आत्मविश्वासके ठेस पहुँचौने बिना नहुएँ-नहुएँ कएल जा रहल हो; अइ स्कूलमे बच्चाक पूर्व अर्जित ज्ञानक स्वागत

होइत हो; एतए बच्चा मातृभाषासँ प्रान्तीय भाषामे सहज ढंगे विचरण करैत अछि।

दोसर ओ स्कूल अछि जतए बच्चाक प्रवेशक संगहि ओकर शिक्षा कोना अपरिचित भाषामे शुरू होइत अछि, ओतए अपन भाषा मुँहसँ निकालिते ओकरा 'गँवार' कहल जाइत अछि, ई स्कूल बच्चाक अपन भाषाकेँ स्वीकार नई करैत अछि। जँ अइ दुन्नू स्कूल आ बच्चा सभक आकलन करब त' पाएब, जे पहिल स्कूलसँ निकलल बच्चा आत्मविश्वाससँ भरल हएत। अपन जड़िसँ जुड़ल अइ बच्चाक मोनमे अपन भाषाक प्रति कोनो दुराव अथवा हीन-भावना नई हएत। अइ बच्चाक प्रान्तीय आ अंग्रेजी भाषा पर सेहो पर्याप्त अधिकार हएत। मुदा दोसर स्कूलसँ निकलल बच्चाक भाषाकेँ नकारल जेबाक कारणेँ ओकरामे आत्मविश्वासक कमी देखाएत आ दोसर भाषाक चक्करमे पड़िकए ओकर ध्यान अभिव्यक्तिक बदला सही उच्चारण आ व्याकरण पर चलि जाएत। आगू चलि कए ओ विचारक तारतम्य बैसेबाक बदला भाषा दुरुस्त करबामे लागल रहत।

दुमका क्षेत्रमे साक्षरता अभियानक दौरान हिन्दीमे पाठ्य-पुस्तक (प्रौढ लोकनि लेल) विकसित कएल गेल। पोथी बहुत नीक छल, मुदा ओहिसँ कोनो तरहक समझ नई बनि पाबि रहल छल। फेर स्थानीय लोकक मदतिसँ न'ब पठन सामग्री विकसित कएल गेल आ से बहुत लोकप्रिय साबित भेल। ई पोथी सब सन्थाली भाषामे बनाओल गेल। किछु लोकक कहब छलनि जे शुरुआती दौरमे इएह ठीक हएत, मुदा बादमे काज-धाजक भाषाकेँ समाविष्ट करब सेहो जरूरी हएत। अइ अनुभवक उपयोग विद्यालयी शिक्षामे सेहो कएल जेबाक चाही, अर्थात् समझ बनएबा लेल हुनका लोकनिक अपन भाषा आ फेर नहुएँ-नहुएँ बेसी प्रयुक्त होइवला भाषा अथवा सम्पर्क भाषा।

— एक प्रतिभागी

बच्चा सभ अपन ल'ग-पासक परिवेश आ सौँसे दुनियाकेँ बुझैत अछि आ विद्यालयमे अपन सम्पूर्ण अस्मिता ल'क' अबैत अछि। स्कूलमे जँ ओकर घरक भाषाकेँ अस्वीकार कएल जा रहल अछि, त' एकर अर्थ भेल जे बच्चा, एखन धरि स्वयंकेँ जइ भाषामे गढ़ने अछि, तकरा अस्वीकार कएल जा रहा अछि। बच्चा, जइ भाषामे अपन अस्मिताक गठन केलक अछि, जकरा द्वारा ओ दुनियाक बारेमे एकटा समझ बनौलक अछि, तकरा अस्वीकार करब ने केवल मातृभाषाकेँ अस्वीकार करब थिक, बल्कि ओकर समझक

आधारकें अस्वीकार करब थिक। तें हमरा लोकनिकें बच्चाक भाषाकें स्वीकार करए पड़त। ओकर भाषाक सीमा सेहो हएत, मुदा हमरा लोकनिकें ओकरा ओकर संगहिं स्वीकार करए पड़त। प्रारम्भिक समयमे ओकरा अप्पन भाषामे पढ़बाक (बुझबाक) मौका देल जेबाक चाही। नहुएँ-नहुएँ ओकरा अपन राज्यक आ व्यापक ज्ञानक भाषाक संग जोड़ल जेबाक चाही। अइ प्रयासमे प्रान्तीय भाषा सभकें ओकर अपन भाषासँ प्रभावित हेबाक छूट देबए पड़त। ई प्रयास न'ब वस्तुकें सार्थक पद्धतिएँ बुझबामे मदति करत आ पढ़ब सिखबामे आत्मनिर्भरता आ आत्मविश्वास आनता बच्चा, जे भाषा पहिने बाजब शुरुह केलक, ओहीमे ओकर समझ बनैत अछि आ ओहीसँ ओ अर्थ निकालैत अछि। ओ अर्थ बच्चा सभ लेल मूल्यवान होइत अछि, हमरा लोकनिकें ई बात बूझए पड़त। अइ लेल हमरा लोकनिकें कक्षामे न'ब तैयारी करए पड़त-

ई कतेक दुखक गप थिक जे हमरा लोकनि स्वराजक बात सेहो परकीय भाषामे करैत छी? जइ शिक्षाकें अंग्रेज ठोकराए देलक अछि, से हमरा लोकनिक सिंगार बनैत अछि, ई बात बूझ' जोगर अछि।---ओ लोकनि जकरा बिसारि जकाँ देलनि अछि, तकरहिसँ हमरा लोकनि अपन अज्ञानक कारणें चिमटल रहै छी। ओकरा सभमे अपन-अपन भाषाक उन्नति करबाक प्रयास चलि रहल अछि। वेल्स इंग्लैण्डक एकटा छोट सन परगना अछि; ओकर भाषा धूरा-सन नगण्य अछि। एहनो भाषाक जीर्णोद्धार भ' रहल अछि।

वेल्सक बच्चा सभ वेल्स भाषहिमे बाजए, से प्रयास ओतए चलि रह अछि। अइमे इंग्लैण्डक खजांची लॉयड जॉर्ज पुरजोर भागीदारी करैत अछि। आ हमरा लोकनिक दशा केहेन अछि? हम सब एक-दोसराकें पत्रे लिखै छी, त' गलत अंग्रेजीमे लिखै छी।...नीकसँ नीक विचार प्रकट करबाक हमरा लोकनिक माध्यम अंग्रेजी होइत अछि;...जँ दीर्घकाल धरि अहिना चलल, त' हमर मानब अछि जे अबैवला पीढ़ी हमरा लोकनिक तिरस्कार करत आ ओकर शाप हमरा लोकनिक आत्मकें लागत।... हमरा त' लगैत अछि जे हमरा लोकनिकें अपन समस्त भाषाकें उज्ज्वल-शानदार बनएबाक चाही। हमरा लोकनिकें अपनहि भाषामे शिक्षा लेबाक चाही--एकर की अर्थ भेल, से बेसी बुझएबाक ई स्थान नइँ थिक। जे अंग्रेजी पुस्तक काजक अछि, हमरा लोकनिकें तकर अनुवाद अप्पन भाषामे करए पड़त।

— हिन्द स्वराज सँ

- समय, भाषा आ समझ परिवर्तनशील होइत अछि आ हमरा लोकनिकें अइ परिवर्तनक प्रक्रियाकें ध्यानमे रखैते अर्थ निकालबाक अवसर देबए पड़त।
- बच्चा संसार भरिक भाषा सीखबाक क्षमता ल' क' जन्म लैत अछि। ओकर अइ क्षमताक कक्षामे सम्मान करए पड़त।
- बच्चाक अवधारणा ओकर अनुभूति आ ओकर देखबाक भाषाकें कक्षामे स्थान देबए पड़त।
- हमरा लोकनिकें ओकरा ध्वनि-समूहसँ खेलबाक अवसर देबए पड़त।
- हमरा लोकनिकें ओकरा अपन अर्थ गढ़बाक अवसर देबए पड़त।
- शिक्षक लोकनिकें परिभाषा देने बिना अवधारणा धरि पहुँचबाक प्रविधि तैयार करए पड़तनि।
- पाठ्य-सामग्रीक सीमाकें विस्तारमे बदलए पड़तनि।
- अनुवादक यान्त्रिकताकें रचनात्मक बनबए पड़त।
- बिना सन्दर्भक भाषा सिखएबाक प्रयासकें छोड़ए पड़त। अर्थात् अइ भ्रमकें दूर करए पड़त जे मात्र क, ख, ग, घ अथवा a,b,c,d टा भाषा थिक।
- भाषा बच्चाक अस्मिता, संस्कृति आ विकाससँ जुड़ल होइत अछि।
- भाषा ओकर आगू बढ़बाक माध्यम थिक।
- बच्चा कोनो न'ब चीज देखै काल ओकरा भाषासँ जोड़िकए देखैत अछि।
- भाषा अनुभव-संसारक व्याख्या करबाक आ विश्लेषण करबाक आधार होइत अछि।
- जे बच्चा बाजि नई सकैत अछि, ओकरहु एकटा भाषा होइत अछि।
- अध्यापककें ईहो करए पड़तनि जे ओ मैथिलीमे स्थानीय भाषाक प्रवाहकें निर्बाध रूपेँ आबए दैथ। चाहे उच्चारण हो, वाक्य संरचना हो अथवा मोहावरा हो। अइसँ मैथिली आ स्थानीय समुदाय, दुनूकें बल भेटतनि।

सार्थक शिक्षाक प्रयास

बच्चा सभ पर आन भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा लादि कए हमरा लोकनिक शिक्षा व्यवस्था 'चुप्पीक संस्कृति'कें जन्म देल अछि। बच्चाक अवबोध'क समस्त बाट बन्न क' देबाक चेष्टा केलक अछि। कैक टा द्वीप-समूहक एकटा छोटा-सन देश अछि--पपुआ गिनी। ई देश अपन भाषा-नीतिसँ सिद्ध क' देलक अछि जे प्राथमिक शिक्षा चारि सयसँ बेसी भाषामे देल जा सकैत अछि। ई देश भाषाकें अवबोध'क वाहन बनएबाक प्रयास केलक

अछि। बच्चाक अप्पन भाषाक उपयोग करैत, अंग्रेजी अथवा कोनो अन्य भाषाक संग जोड़बाक प्रयास केलक अछि। हमरा लोकनिकें सेहो अइ दिशामे प्रयास कर' पड़त। हमरा लोकनिकें प्राथमिक शिक्षाक सन्दर्भमे जापान, कोरिया, क्यूबा, फिनलैण्ड आ कनाडा सन-सन देशक भाषा-नीतिक अनुसरण करबाक चाही। कनाडा अइ बात पर विशेष जोर देलक अछि, जे कोनहु टा बच्चा अपन भाषाक कारणे पाछू नई रहि जाए। एम्हर 'शिक्षाक अधिकार' कानूनहुमे जोर दैत मातृभाषामे शिक्षाक बात कहल गेल अछि। बच्चाक बेहतर शिक्षा लेल जरूरी अछि जे ओ सार्थक हो। हमरा लोकनिकें ईहो प्रयास करए पड़त जे ई शिक्षा बच्चाकेँ ओकर क्षमताक विश्वास दिआ सकए। एहेन शिक्षा पहिल भाषा मात्रमे देल जा सकैत अछि। भाषा वैज्ञानिक लोकनि ईहो कहै छथि जे पहिल भाषा समृद्ध होइत अछि त' दोसर भाषा सीख'मे आसानी होइत अछि।

3

बहुभाषिकता

- बहुभाषिकताक उद्देश्य
- बच्चाक भाषा क्षमता
- सार्वभौमिक व्याकरणक परिकल्पना
- बहुभाषिकता आ अल्पसंख्यक तथा आदिवासी भाषा
- बहुभाषिकता आ दक्षिण भारतीय भाषा
- बहुभाषिकता आ अंग्रेजीक कक्षा
- बहुभाषिक कक्षा
- बहुभाषिकताक चुनौती

अकाशकें की जानत?’ बच्चाक अपन भाषामे शिक्षाक सम्बन्धमे ई खिस्सा बहुत अर्थ रखैत अछि। हमरा लोकनिकें बच्चाक अपन जमीन मजगुत बनबए पड़त। अइ प्रक्रियामे सिद्धान्त सभक बात करबाक चाही, जकरा शिक्षाक दुनियामे क्रियान्वित कएल जा सकए। अइसँ ईहो स्पष्टअछि जे हमरा लोकनिकें जमीनी शिक्षाक बाट ताकए पड़त। बहुभाषिकता एकटा एहेने बाट थिक।

बहुभाषिकताक उद्देश्य

बहुभाषिकता हमरा लोकनिक जीवनक एकटा जरूरी हिस्सा थिक। हमरा लोकनिक संस्कृति हमरा लोकनिक अस्मितासँ जुड़ल अछि। हम सब गोटाए बहुभाषी छी आ हमरा लोकनिक बहुभाषी हएब हमरा लोकनिकें दोसरासँ जुड़’मे आ हुनका लोकनिकें बूझ’मे मदति करैत अछि। आइ-काल्हि एक देशसँ दोसर देशमे लोकक अबरजात भ’ रहल अछि आ हमरा लोकनि ओत’क आर्थिक, सामाजिक जीवनहुमे जगह बना रहल छी। तें अइ समयमे एक राष्ट्र, एक भाषा, एक संस्कृतिक अवधारणाक कोनो स्थान नई अछि-से बात सोचब ने केवल निरर्थक हएत बल्कि सौँसे दुनियाक ज्ञानसँ आँखि मूनब सन हएत।



एक दिन कोनो गाममे बहुते हो-हल्ला मचल। महान खगोलविद् आएल छथि। नक्षत्रक बहुत पैघ जानकार छथि। दू दिन धरि अपन आतिथ्य करबैत रहलाह आ अकाश दिश तकैत रहलाह। तेसर दिन ओ कतहु नजरि नई अएलाह। लोक ताकब शुरुह केलक। भेटबो केलाह त’ कतए, एकटा इनारमे छपाछप क’ रहल छलाह। लोक कह’ लागल, ‘जकरा जमीन पर चलबाक बाटक ज्ञान नई, से भला

हमरा लोकनि ई बात बूझै छी आ एकर प्रयोगो खूबे करै छी। अइ तथ्यसँ किओ नठि नई सकै'ए जे ई बात बच्चो सभक जीवनसँ जुड़ल अछि। त' फेर बच्चा सभकेँ अइ सँ दूर किए राखल जाइत अछि। बच्चाकेँ बूझ' लेल, ओकरा सभसँ सम्बन्ध काएम कर' लेल, ओकरा सभकेँ स्कूलसँ जोड़ै लेल, ओकरा सभक घरक भाषा आ स्कूली भाषाक बीच एकटा पुल बनएबा लेल बहुभाषिकताक अहम् भूमिका अछि।

बच्चा सभ मातृभाषा जनैत अछि, आस-पासक परिवेशमे ओकर उपयोग होइत देखि रहल अछि। आब प्रयोजन अइ बातक अछि जे ओकरा लोकनिक अप्पन भाषाकेँ मजगूत आधार द' कए ओकर भाषा आ दोसर भाषाक बीच एकटा पुल बनाओल जाए। अइ तरहेँ ओकरा दू-तीन आओर भाषामे पहुँचाओल जा सकैत अछि, जाहिसँ ओ सहजतासँ शिक्षा ग्रहण क' सकए।

मातृभाषाक उपयोग रीढ़क हड्डी जकाँ चलैत रहबाक चाही। लीखब-पढ़ब हमरा लोकनि एकहि बेर सीखै छी। मातृभाषामे ई कौशल पकठोस भ' जाए, त' अन्य भाषामे लीखब-पढ़ब बहुत आसान भ' जाइत अछि।

बच्चाक भाषा क्षमता

स्कूल अएबासँ पहिने अधिकांश बच्चा एकहि टा भाषा नई, अकसर अनेक भाषा सीखि लैत अछि। स्कूल अएबासँ पहिने बच्चा लगभग पाँच हजार अथवा ताहूसँ बेसी शब्द जनैत रहैत अछि। तेँ बहुभाषिकता हमरा लोकनिक पहिचान अथवा अस्मिताक निर्धारक थिका। एते धरि जे दूरस्थ गाम-देहातक लोक अथवा कथित रूपक 'एकलभाषी' सेहो अनेक सम्प्रेषणात्मक स्थितिमे सही-सही भाषाक उपयोग करबाक क्षमता रखैत अछि।

स'ब बच्चा चारि बर्खक वयसहिमे कैक टा भाषा सीख'क क्षमता रखैत अछि।

× × ×

भारतक संविधानक अनुच्छेद 29 कहैत अछि-अपन भाषा संस्कृतिकेँ बचएबाक अधिकार अछि अनुच्छेद 30 आ 350 'ए' सेहो अही सन्दर्भक बात करैत अपन-अपन भाषाक संरक्षण सहेजबाक आ सुलभताक बात करैत अछि।

अनेक अध्ययनसँ पता चलल अछि जे संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक सहनशीलता, विकेन्द्रित चिन्तन एवं शैक्षिक उपलब्धिसँ बहुभाषिकताक सकारात्मक सम्बन्ध सम्भव होइत अछि। भाषा वैज्ञानिक दृष्टिसँ स'बो टा भाषा, जकरा हमरा लोकनि बोली,

आदिवासी अथवा खिचड़ी भाषा कहैत रहल छी, से सब समान रूपसँ वैज्ञानिक होइत अछि। स'ब भाषा एक दोसराक सान्निध्यमे फलित-विकसित होइत अछि, संगहि अपन विशेष पहचानो बना कए रखैत अछि। बहुभाषिक कक्षामे ई पूर्णतया अनिवार्य हेबाक चाही, जे हरेक बच्चाक भाषाकेँ सम्मान देल जाए आ बच्चाक भाषायी विभिन्नताकेँ शिक्षण विधिक हिस्सा मानि कए भाषा सिखाओल जाए।

सार्वभौमिक व्याकरणक परिकल्पना

भाषाविद् लोकनि सेहो भाषा शिक्षणक सन्दर्भमे अही प्रकारक बात कहै छथि। हरेक भाषामे स्वर आ व्यंजन होइत अछि। हरेक भाषाक अपन एकटा विशेषता होइत अछि आ से एक दोसराक समतुल्य नई भ' सकैत अछि। ओ स्वयंमे 'अद्वितीय' होइत अछि। उदाहरण स्वरूप हम अपन बात कहबाक प्रयास क' रहल छी, 'ट्राई क' रहल छी, 'अहाँ खएबाक प्रयास करू', 'ट्राई क' कए त' देखियौ'। एतए स'बोटा वाक्यमे 'ट्राई' के सन्दर्भ बदलि रहल अछि। अइ उदाहरणसँ स्पष्टअछि जे पर्यायवाची शब्द बरमहल एकहि अर्थ नई द' सकैत अछि। जै व्यक्तिकेँ दू अथवा दूसँ बेसी भाषाक ज्ञान छै, ओकरा जिमामे एकहि भाषा-व्यवस्थाक दू टा हिस्सा छै आ अलग-अलग भाषाक अलग-अलग 'व्यवस्था' सेहो छै। बच्चे ने बोतल तोड़ी। ई उर्दू, पंजाबी, हिन्दी कोन भाषा-व्यवस्थाक वाक्य थिक? तीनू भाषाक सेहो भ' सकैत अछि मुण्डे नाल मैं नी जा सकदी। (लड़काक संग हम नई जा सकबा।) पंजाबीमे 'मुण्डे'क संग 'दे' (कारक विभक्ति) लगएबाक प्रयोजन नई अछि। ई स'ब भाषाक अपन-अपन व्यवस्था होइत अछि। बच्चा स्वयमेव आस-पास बाजल जाइवला भाषाक ध्वनि-समूह, वाक्य रचना आ शब्द जनैत अछि। दू भाषाक बीच अन्तरकेँ सेहो बुझैत अछि, भाषाक संरचनात्मक बनावटि सेहो जनैत अछि। उदारहण लेल, मैसूरक कोनो व्यक्ति 'कांघी'केँ 'कांधी' कहत। हमरा लोकनि जँ भाषा सभक व्यवस्था चीन्हि ली, त' सीख'मे आब'वला कठिनाइकेँ आसानीसँ बूझि सकै छी। जकर जानकारीमे दू अथवा दूसँ बेसी भाषाक ज्ञान अछि, ओकरा लेल एक शरीर दू आत्मा होइत अछि। ई

नागालैण्डमे यद्यपि अंग्रेजीकेँ सरकारी काज-धाजक भाषा बनाओल गेल अछि, मुदा प्रयोजनक हिसाबें 17 आदिवासी भाषाकेँ सेहो प्राथमिक स्तर (शिक्षा) पर स्वीकार कएल गेल अछि। एकटा भाषा त' एम-ए- धरि पढ़ाओलो जाइत अछि। सर्वशिक्षा अभियान द्वारा प्रयास जारी अछि जे बच्चाकेँ ओकरहि भाषामे पढ़ाओल जाए।

‘विकास’ मात्रक हिस्सा थिक। एक बातक ध्यान राखब जरूरी अछि जे भाषा मेटि जाएत, त’ संस्कृति सेहो ओकरा संगहि मेटि जाएत। अफ्रीकामे भाषा मेटि जेबाक कारणें, एक टा संस्कृति नष्टहेबाक कछेर पर पहुँचि गेल छल, मुदा लोक समय पर सचेत भ’ गेला।

बहुभाषिकता आ अल्पसंख्यक तथा आदिवासी भाषा

जे भाषा सब कम लोक द्वारा बाजल जाइत अछि, सामान्यतया ओइ कोटिक बच्चा स्कूलमे नई आबि पबैत अछि। बहुभाषिकताकें सम्मान द’ कए हमरा लोकनि ओइ समस्त बच्चाकें शिक्षाक परिधिमे आनि सकै छी। बहुभाषिकताक सन्दर्भमे भाषायी अल्पसंख्यकक अधिकार थिक, जे ओकरा अपन भाषामे प्राथमिक शिक्षा भेटै। भाषा संरक्षण लेल एकटा ऐजेन्सी सेहो बनए। एकटा अल्पसंख्यक भाषा आयोग बनल अछि, जकरा अनुसारें एखन स्थिति ई अछि जे किछु भाषा एहेनो अछि, जो अल्पसंख्यक नई अछि, तइओ शिक्षाक खेमासँ बाहर अछि।

शोध ईहो कहैत अछि जे आदिवासी बच्चाकें आगू आनइए लेल बहुभाषिकताक बात कएल गेल अछि। आदिवासी बच्चा जखन विद्यालय अबैत अछि त’ ओकरा न’ब भाषा भेटै छै, चाहे असमिया हो अथवा कोनो आओर भाषा। ओकरा अइ उद्देश्यसँ स्कूल आनल जाइत अछि जे एकरहु मुख्यधारासँ जोड़बाक अछि, भनहि ओकर भाषा चेन्जु अथवा आन कोनो हो। परिणाम ई होइत अछि जे जै भाषामे ओकरा अपन संस्कृतिक समझ बनलै अछि, ओ तहीसँ दूर भ’ जाइत अछि।

बहुभाषिकता आ दक्षिण भारतीय भाषा

एक टा मान्यता ईहो अछि जे दक्षिण भारतमे समझ लेल ओतएक अप्पन भाषा तमिल, कन्नड़, तेलुगु अथवा मलयालम आ अंग्रेजी पर्याप्तअछि। त्रिभाषा सूत्रक अनुसार तेसर भाषा हिन्दी पढ़ब ओकरा सब लेल बोझ भ’ सकैत अछि। स’ब राज्यक अपन आधिकारिक भाषा अछि। बच्चा सभक अपन-अपन आओरो भाषा सब अछि। आ तेसर भाषा अंग्रेजिओ अछि। आब प्रश्न ई उठि सकैत अछि जे एतेक भाषाक होइतहु प्राथमिक शिक्षा मातृभाषहिमे किये?

अइ सन्दर्भमे ध्यातव्य थिक जे बहुत रास बच्चा पाँचम कक्षाक बाद पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि दैत अछि। मातृभाषा ओ पहिनहिसँ जनैत रहैत अछि। तें पाँचम कक्षा धरि पढ़ाइ-लिखाइ ओकर मातृभाषामे हो त’ पढ़ाइ आसान भ’ जाएत, अन्यथा पाँचो बर्ख दोसर

भाषा सीखबाक फेरमे बीत जाएत आ ओ 'सार्थक' सन किछु नई क' पाओत। त्रिभाषा सूत्र बहुभाषिक अवधारणा नई थिक, ने ई कोनो नीति थिका। एकरा एकटा कार्यक्रम कहल जा सकैत अछि। अइमे भाषाक विविधताक बातकेँ फेरसँ देखबाक प्रयोजन हएत। ई बहुभाषिकते द्वारा भ' सकत।

बहुभाषिकता आ अंग्रेजीक कक्षा

अंग्रेजी शिक्षणक उद्देश्य एहेन बहुभाषी-समूह तैयार करब अछि जे हमरा लोकनिक स'ब भाषाकेँ समृद्ध क' सकए, स्वीकृत आ राष्ट्रीय दृष्टिकोण इएह रहल अछि। तेँ अंग्रेजी चाहे जै कोनो कक्षा (I-III अथवा IV अथवा V/VI)मे शुरू हो, ओ अर्थवान स्थितियहिमे सिखाओल जाए। मुदा सामान्यतया अंग्रेजीक कक्षामे मातृभाषाक प्रवेश गुप्तघुसपैठियाक रूपमे होइत अछि। उत्तर लिखबै काल शिक्षकगण पाठ केर अनुवाद आ व्याख्या संग-संग करैत जाइ छथि। समझ बनएबाक क्रममे बच्चाक मातृभाषाक बहुलतासँ उपयोग क' कए अथवा अंग्रेजीसँ सम्बन्धित क' कए सही स्थान देल जा सकैत अछि। एकर एकटा उदाहरण प्रभु (1987) देने छथि-बंगलौर (बेंगलुरु) प्रोजेक्टमे मातृभाषाक प्रयोगक सीमा कार्यक जरूरतिसँ सहजहि तय भ' गेल छल। ओतए सामग्री अंग्रेजीमे छल आ जवाबो अंग्रेजीयहिमे अबै छल। आवश्यकता पड़ला पर मातृभाषे अंग्रेजी भाषाकेँ बोधगम्य बनौलका जँ अंग्रेजीमे विविध प्रकारक सामग्री उपलब्ध हो आ ओकरा बुझबाक सही प्रयास हो, त' मातृभाषा दखलन्दाजी नई करैत अछि, बल्कि सहायक होइत अछि। क्रेसन (1985:94) कहै छथि जे संग-संग कएल जाइवला अनुवाद प्रभावी नई होइत अछि, कक्षामे दू भाषाक उपयोग पहिल भाषाकेँ पृष्ठभूमिमे राखि लक्ष्य-भाषाक सामग्रीकेँ बोधगम्य बनएबा लेल कएल जाए।

अंग्रेजी भाषा-शिक्षणक सामग्री तैयार करबा लेल मातृभाषाक उपर्युक्त प्रयोगक समझ बनबैमे शिक्षक लोकनिक भागीदारी निश्चित करबाक प्रयोजन अछि। भाषा-शिक्षणक उपर्युक्त स्तर की भ' सकैत अछि, अइ विषय पर शिक्षक लोकनिक मानसिकताकेँ सम्बोधित करबाक प्रयोजन अछि।

किछु सम्भावना

- प्राथमिक स्कूलमे भाषा आ भाषाक बीच तथा 'भाषा' आ 'विषय'क बीच व्यवधान हटएबाक प्रयास करए पड़त। अपन आस-पासक दुनियाक प्रति जागरूक हएबा लेल

निम्न प्राथमिक स्तर पर अथवा कमसँ कम कक्षा 1 सँ 3 धरि जे भिन्न-भिन्न गतिविधि बच्चा सबसँ करबाओल जाइत अछि, से अंग्रेजीक संग-संग मातृभाषाहुमे करबाओल जा सकैत अछि (दास 2005)। अइ प्रकारक बहुभाषी गतिविधिक विकास लेल सामग्री तैयार करबाक आ शिक्षक लोकनिक सहयोगसँ स्पष्टप्रविधिक निर्देश तैयार करबाक प्रयोजन अछि, जइमे एकसँ अधिक भाषाक उदाहरण हो। ओइमे कोड-परिवर्तनक उदारता सेहो हेबाक चाही।

- एकसँ अधिक भाषामे समान्तर पाठ लागू करब, एकहि कथासँ भ' सकैत अछि। जेना. एन.बी.टी. अंग्रेजीक संग-संग विभिन्न भारतीय भाषामे सेहो कथा छपलक अछि (द्रष्टव्य-अमृतावल्ली आ रामेश्वर राव, 2001)। प्रॉमिस फाउण्डेशन चारि भारतीय भाषा आ अंग्रेजीमे गतगर पोथी तैयार करौलक अछि। सी.आई.ई.एफ.एल.क सम्पूर्ण भाषा दृष्टिकोणक अधीन द्विभाषी पोथी तैयार कएल गेल अछि। एहेन समान्तर पाठ एक दोसराक यथावत अनुवाद हो, से अनिवार्य नइँ अछि, मुदा ओ समान अर्थवाही हो आ ओकरामे एक रंग भाषिक गतिविधि; जेना- तुक, ध्वनि-खेल आदि शामिल हो, जइसँ बच्चा भाषाक ध्वनि आ संरचनाक प्रति सचेत हो। पढ़बाक क्रिया एकटा संचरणीय कुशलता थिक। एक भाषामे पढ़बाक कुशलता दोसर भाषा सीख'मे मदति करैत अछि (वेस्ट 1941)। ई समान लिपिवला भाषा मात्रमे नइँ, भिन्न लिपिवला भाषामे सेहो प्रभावी होइत अछि (बंगाली आ अंग्रेजी पर वेस्ट काज कएलनि अछि: दू लिपिक स्थिति आ पढ़बाक संचरणीयताक मादे आब थोड़-बहुत जानकारी अछि)।
- ऊपर देल गेल सुझाव समान्तर अथवा संग-संग काज कर'वला भाषाक बारेमे अछि, ओतहि द्विभाषी अध्ययन-अध्यापन केनिहार लेल अथवा मिश्रित कोडक द्विभाषी पाठ पर सेहो प्रयोगात्मक कार्य उपलब्ध अछि (द्रष्टव्य: डोवेरा 2005, फेलिक्स 1998)। एकर शैक्षणिक सम्भावना ताकल जा सकैत अछि।

– अंग्रेजी शिक्षण-आधार पत्र, पृष्ठ 13-14

बहुभाषिक कक्षा

कोनो भाषा कोना पढ़ाओल जाइत अछि? अइ लेल हमरा लोकनिकें पहिने लिखबाक विज्ञान बूझए पड़त। एतए दिमाग आ हाथक संयोजन/समन्वयन चाही। 5-6 बर्षक आयु धरि ई विकास दिढ़ नइँ होइत अछि। तें लिख'मे कठिनाइ होइत अछि। मुदा शोध ईहो कहैत अछि जे बच्चाक मोनमे प्रिण्टक अवधारणा अथवा समझ बनएबा लेल पढ़बाक

संग-संग लीखब सेहो शुरुह करबाक चाही। ई लीखब, रेखाक माध्यमे सेहो भ' सकैत अछि। ई बूझब सेहो जरूरी अछि। सूनब आ बाजब बहुत महत्वपूर्ण अछि। गणित सिखएबाक बात हो, त' बच्चा गणित पहिनहिँसँ जनैत रहैत अछि। बिन सिखौनहिँ ओकरा टॉफी बाँटए आबि जाइत अछि, अही तरहें पानिक तीन टा रूप-ठोस, तरल आ भाप-मातृभाषाक माध्यमे नीक जकाँ बुझाओल जा सकैत अछि-मुदा बच्चाक मोनमे अवधारणा स्पष्टभेलाक बाद। मातृभाषाक माध्यमे पारिभाषिक शब्दक आदान-प्रदान सेहो भ' सकैत अछि। दोसर-तेसर भाषा भनहिँ जुड़ि जाए, मुदा मातृभाषाक प्रयोग चलैत रहबाक चाही। ओ अपन मातृभाषाक माध्यमे आनहु भाषाकें बूझए लगैत अछि। हमरा लोकनिकें तँ बस, शिक्षाक नदी पर एकटा खूब मजगूत पुल बनएबाक अछि।

ध्यान देबाक बात ईहो अछि जे हम ओएह सुनैत आ बुझैत छी जे पहिनेसँ नईँ बूझल अछि। बाकी सब किछु मामूली-सन लगैत अछि, हमरा लोकनि तकरा छोड़ि दैत छी। जरूरतिकें ध्यानमे रखैत जे मजदूर बिहारसँ असम, पंजाब आदि स्थान पर जाइ छथि आ ओतएक भाषा सीख लै छथि।

बहुभाषिकताक चुनौती

- सबसँ पहिल बात ई अछि जे भाषाक रूपमे भाषा पढ़ाएब अलग बात थिक आ माध्यमक रूपमे अलग। भाषा पढ़ाएब केवल भाषा शिक्षके

यूनेस्कोक शैक्षणिक आधार पत्र (2003)क अनुसार आरम्भिक शिक्षण लेल मातृभाषा अत्यन्त आवश्यक अछि आ एकरा जतए धरि जारी राखल जा सकए, राखल जेबाक चाही। किछु अध्ययन (जेना सहगल 1983) स्पष्ट केलक अछि जे जे बच्चा मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा प्राप्त करैत अछि, से भाषिक अथवा विद्वत्ताक स्तर पर अंग्रेजी माध्यमसँ पढ़ि रहल समान स्तरक विद्यार्थी लोकनिक तुलनामे कोनो अर्थे न्यून नईँ होइत अछि। 15-17 बर्षक बीच 78 टा बच्चा सब पर कएल गेल शोधक पश्चात गुप्ता (1995)क कहब छनि जे आरम्भिक अवस्थामे दू बर्ष धरि माध्यमक रूपमे मातृभाषाक उपयोग, बच्चा सभमे मातृभाषा अथवा द्वितीय भाषामे बेसी नीक दक्षता उत्पन्न करैत अछि।

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र, 1-3, पृ- 51

आजुक कक्षा सबमे अंग्रेजीमे पढ़ाइ देखिकए कौखन मोनमे अबैत अछि जे पहिने लोक हीरा, मोती लूटै छल। आइ-काल्हि भाषाक माध्यमे दिल आ दिमाग लूटैत अछि।

— एक प्रतिभागी

टाक काज नईं थिका। दोसर विषय पढ़ब-पढ़ाएब भाषाक तत्त्वक बिना सम्भव नईं अछि। विज्ञानहुमे क्रिया, संज्ञा आ सर्वनाम होइत अछि। हिन्दी अथवा कोनो भाषिक संरचना आकि विज्ञानक अवधारणा संग-संग चलबाक चाही।

- बहुभाषिकतामे दोसर समस्या लिपि के अबैत अछि। उदाहरणस्वरूप जेमी (असम आ नागालैण्डमे) रोमन लिपि चुनलनि अछि। अइ प्रक्रियामे ओ बच्चाकेँ 'ए' सँ 'जेड' धरि सिखाओत। जखन कि जेमीमे ई समस्त अक्षर उपयोगमे नईं अबैत अछि।
- तेसर समस्या ई अछि जे स्कूलमे लिखबा-पढ़बा पर बहुत जोर देल जाइत अछि-बजबा-सुनबा पर एकदम्मे नईं।
- शिक्षण-अधिगम सामग्रीक उपयोग सेहो एकटा समस्या अछि। ओ ने त' सुरुचिपूर्ण होइत अछि, ने संस्कृतिसँ मेल खाइत। उड़ीसाक जनजाति सभमे जन्मदिवस पर उपहार देबाक चलनि नईं अछि, मुदा अइ तरहक उदाहरण शामिल क' लेल जाइत अछि।
- एकटा आओर समस्या भाषा शिक्षकक नियुक्तिकेँ ल' क' अछि। भाषा-शिक्षक नियुक्ते नईं कएल जाइत अछि। ई काज कोनो व्यक्ति अथवा कोनो विषयक अध्यापककेँ द' देल जाइत अछि। भाषे त' पढ़ेबाक छै।
- समुदायकेँ कोनहुँ टा स्तर पर जोड़बाक उद्यम नईं कएल जाइत अछि। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषाक रहब जरूरी अछि आ बादमे आओर भाषा जोड़ल जा सकैत अछि। व्यवधान आओत, मुदा तइ लेल समाधान ताकल जा सकैत अछि।
- हमरा लोकनि जखन-कखनहुँ कक्षामे पढ़ाबी, त' एक भाषाक सम्बन्ध दोसर भाषासँ जोड़ी! एसगरे एकहि टा भाषाकेँ ल' क' चलब त' कक्षामे बात बनिए नईं सकत। मुदा दुख अइ बातक अछि जे जइ तरहेँ खेत-खरिहान, चिट्ठी आदि विलुप्तभ'

बर्लिट्ज भाषा स्कूल---सीखनिहार लेल संसाधनक एकटा नीक उदाहरण अछि। ई स्कूल कानून बना क' हमरा लोकनिकेँ मजबूर नईं करैत अछि, जे हमरा लोकनिकेँ एकटा आओर भाषा सीखइए पड़त। ओ ईहो नईं कहैत अछि जे एकटा आओर भाषा सीख लेला पर हमरा लोकनिकेँ बढ़ियाँ नोकरी भेटि जाएत अथवा हम सफल आ सम्पन्न भ' जाएब, आ ने इएह कहैत अछि जे नईं सीखला पर हम असफल आ गरीब भ' जाएब। ओ अइ तरहक कोनो करार नईं करैत अछि अथवा धमकी नईं दैत अछि। ओ मात्र एतबे कहैत अछि जे जँ हम एकटा आओर भाषा बाजि सकी त' हम जिनगीक आनन्द उठा सकब।

— शिक्षाक बजाय, जॉन होल्ट

रहल अछि, ओही तरहें ढेरी रास शब्दो विलुप्तभ' रहल अछि। पुआरक टाल, मेह, दौन, पसाहनि, ओसाएब, उलाएब, भूजब इत्यादि शब्द आब प्रयोगमे नई रहि गेल अछि।

- साहित्यकारहुकेँ अइ दिश ध्यान देब' पड़तनि जे बहुभाषिकताक कारणहिं हमरा लोकनि अन्यान्य भाषा जानि पबै छी। कबीर बहुभाषी सन्त कवि छलाह। ओ लोककेँ बुझब' लेल सधुक्कड़ी भाषा अपनौलनि। हवीब तनवीरक 'आगरा बाजार' आ भिखारी ठाकुरक बहुचर्चित नाटक 'बिदेसिया' बहुभाषिकतेक उदाहरण थिक।
- हमरा लोकनिक देश बहुभाषी अछि। तें बहुत रास भाषा जानब ने केवल हमरा लोकनिकेँ एक दोसरासँ जोड़त, बल्कि भाषा-समूहकेँ सेहो एक दोसरासँ जोड़त। भाषा विचारक पहिया थिक आ द्विभाषी हएब मानवीय बेवहार। हम एकटा एहनो समाज बनबए चाहै छी जे ढेरी रास भाषा बाजए, मुदा अपन बोलीमे। आ सबकेँ लागै जे ई बात अन्ततः ओकरे बारेमे छै।
- जॉर्ज स्टाइनर अपन पोथी 'द मॉडर्न वर्स इन ट्रान्सलेशन' अपन माँकेँ समर्पित करैत लिखलनि- 'टु माई मदर, हू स्पीक्स सैवरल लैग्वेजिज, बट इन हर ओन टंग' (माँ लेल, जे बहुत रास भाषा बजै छथि, मुदा अप्पन बोलीमे)।

संगहि गेल बो भाषा, खतरा आगुओ अछि



अण्डमानमे एकटा 85 वर्षीय महिला बोआ सीनियरक निधनक संगहि प्राचीन भाषा बो कें आगू ल' जाइवला कड़ी सर्वदा लेल टूटि गेला। एकरा भाषा विज्ञानक क्षेत्रमे एकटा अपूरणीय क्षति कहल जा रहल अछि। किएक तँ ओ दुनियाक प्राचीनतम भाषा मेसँ एकटा भाषा बजनिहार अन्तिम व्यक्ति छलीह।

उल्लेखनीय अछि जे अण्डमानक प्राचीन भाषा सभक स्रोत अफ्रीकाकें मानल जाइत अछि। अण्डमानी कैकटा भाषा त' 70 हजार बर्ख धरिक पुरान मानल जाइत अछि। अग्रणी भाषाविद् प्रो. अन्विता अब्बीक कहब छनि जे अपन माता-पिताक मृत्युक बाद पछिला 30-40 बर्खसँ बोआ बो भाषा बजनिहार अन्तिम व्यक्ति छलीह। बोआ स्वयंकें बरमहल अत्यन्त असकरुआ अनुभव करै छलीह। आन कोनो लोकसँ बतिआइ लेल हुनका अण्डमानी हिन्दी सीख' पड़ल छलनि।

चूँकि अण्डमानी भाषाकें पाषाण युगसँ चल अबैत भाषा-समूहक अन्तिम अवशेष मानल जाइत अछि, तें कहल जा सकैत अछि जे बोआ सीनियरक निधनसँ भाषा-समूहक गुत्थीक एक सिरा सदैव लेल हेरा गेला। अण्डमानक जनजातीय-समूहकें चारि समूहमे राखल जाइत अछि-ग्रेट अण्डमानी, जारवा, ओन्गी आ सण्टीनली। बोआ सीनियर ग्रेट अण्डमानी समूहक छलीह। आब अइ जनजातिक 50क करीब लोक मात्र बचल अछि, जइमेसँ अधिकतर बच्चा अछि।

– आधार बी.बी.सी. समाचार

4

विषय सभहक केंद्रमे भाषा



- इतिहासक झरोखासँ
- स'ब विषयक अध्यापक भाषाक अध्यापक छथि
- चिन्तनक आजादी आ मौलिकताक प्रश्न
- भाषा आ अन्य विषय
- तकनीकी शब्दावली आ बच्चाक समझ
- उच्च शिक्षा आ अन्य विषय

आस-पासक वास्तविकता आ घटनाकें हमरा लोकनिक मस्तिष्कमे व्यवस्थित करैत अछि। ई कैक तरहें हमरा लोकनिक पहिचानक चिह्न थिक आ अन्ततः ई समाजसँ, सत्ता आ शक्तिसँ बहुत निकटसँ जुड़ल अछि। हमरा लोकनिकें ईहो मोन रखबाक चाही, जे हमरा लोकनि केवल दोसरेसँ बतिआइ लेल टा नई, बल्कि स्वयंसँ बतिआइ लेल सेहो भाषाक उपयोग करै छी। ई वास्तवमे भाषाक महत्वपूर्ण कार्य थिक। जा धरि हमरा लोकनि स्वयंसँ बतिआएब नई सीख ली, अपन विचारकें कोना स्पष्टक' सकब।

विभिन्न विषय-क्षेत्र, जेना-इतिहास, भौतिक विज्ञान अथवा गणितसँ बतिआएबा लेल अथवा बुझबा लेल सेहो हमरा लोकनिकें भाषाक आवश्यकता होइत अछि। चाहे हम प्रकृतिकें देखी अथवा समाजकें, हम बहुत हद धरि ओकरा अपन भाषाक संरचनाक माध्यमहि सँ देखै छी।

गरीब वर्गक जे बच्चा अंग्रेजी माध्यमक स्कूलमे दाखिल भ' रहल अछि-ओकरा सभक खिस्सा-पिहानी लगभग एक-सन अछि। ओ लोकनि भाषाक संग तालमेल नई बैसा पबैत अछि आ नहुएँ-नहुएँ कात-करौट दिश बदल चल जाइत अछि। दाखिला लेल सरकारक कैक तरहक योजना अछि। पता नई शिक्षण-व्यवस्थामे अइ बातक संज्ञान किए नई लेल जा रहल अछि जे भाषाक अन्तर हुनका लोकनिकें कतहुक नई छोड़तनि।

भाषा एकटा औजार थिक, जकर उपयोग हमरा लोकनि जिनगीकें बूझ' लेल, ओहिसँ जुड़ै लेल आ जीवन-जगतकें प्रस्तुत करबा लेल करै छी।

भाषा केवल सम्प्रेषणक साधने नई थिक, बल्कि ई एकटा एहेन माध्यमो थिक, जकरा बलें हमरा लोकनि अधिकांश जानकारी प्राप्त करै छी। ई एकटा व्यवस्था थिक, जे बहुत हद धरि हमरा लोकनिक

एकटा बच्चाक अभिभावकक इच्छा छलनि जे हुनकर बच्चा अंग्रेजी माध्यमसँ स्कूली शिक्षा ग्रहण करनि। ओहि बच्चाकेँ अपना घरक आस-पास अंग्रेजी भाषाक वातावरण उपलब्ध नई छलै। ओ बच्चा नहुएँ-नहुएँ पिछड़ैत चल गेल। सातम-आठम धरि पहुँचैत-पहुँचैत ओ कैक विषयमे फेल होअए लागल। जइ कारण ओकर आत्मसम्मान आ सृजनात्मकता नहुएँ-नहुएँ शून्यक बरोबरि भ' गेल। अइ स्थितिकेँ देखैत ओइ बच्चाकेँ हिन्दी माध्यम स्कूल जाए पड़लै, किएक तँ अंग्रेजी माध्यमक स्कूल नवम-दसम कक्षामे पढ़एबासँ मना क' देने छलै। पहिल तीन चारि मास त' बच्चाकेँ एकटा न'ब महौलकेँ बूझै-गमैमे लागि गेलै, मुदा ओकर बाद ओ बच्चा पाछू हिआसिकए नई देखलक। किएक तँ आब ओकरा स'ब विषय बूझैमे आबि रहल छलै, 'अप्पन भाषामे'। ओ अपन अवबोधकेँ अपन आस-पास, अपन वातावरणसँ जोड़ि रहल छल। देखैत-देखैत ओ नवम कक्षाक वार्षिक परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त कएलक।

— एक प्रतिभागी

इतिहासक झरोखासँ

देखबाक प्रसंग थिक जे मध्यकाल आ तकर बादक कालमे जे हस्तकला विकसित भेल, से अपन-अपन भाषाक माध्यमे विकसित होइ छल। शिल्प लेल ओकर अलग-अलग केन्द्र होइ छलै। ओतए ओ अपन-अपन भाषामे ज्ञान आ निपुणता प्रदान करै छलै आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी ओ निपुणता चलै छलै। आब ओहो समाप्त भ' गेल, किएक तँ पूँजीवादक विकास ओहि समस्त शिल्पहुकेँ नष्टक' देलकै। संग-संग ओहि समस्त शिल्पसँ जुड़ल मोहावरा सब सेहो नष्टभ' गेलै। ओ भाषा सब सेहो समाप्त भ' गेलै। ओ शिल्प, जे अवबोध'क एकटा माध्यम छलै, ओहो समाप्त भ' गेलै। अही तरहें, जकरा आदिवासी भाषा कहल जाइत अछि, ज्ञानक ओहेन वृहत् भण्डार, जे आदिवासी समूह लग छलै, नष्टभ' गेलै आ नष्टभ' रहल छै। एखन जे आदिवासी

ईसा पूर्व 500 मे वाराणसीमे एकटा घटना घटल छल। भगवान बुद्ध अपन पहिल उपदेश एकटा लोकभाषामे देने छलाह आ ओ उपदेश भाषाक सीमा पार करैत सौँसे भारत आ सौँसे एशियामे एकटा ज्योति जरा देलक। मध्यकालमे वाराणसीमे जखन कबीर कहलनि जे 'संस्कृत थिक कूपजल, भाषा बहता नीर', ओहू समय ठेरी रास भाषा छल। मुदा ई ध्वनि भारतक स'ब भाषामे पहुँचल। भक्ति आन्दोलन सौँसे देशकेँ एकताक सूत्रमे बन्हलक आ एकटा अवाज सुनलक।

— एक प्रतिभागी

क्षेत्र अछि, ओतए शिक्षाक माध्यम की त' अंग्रेजी अछि, की हिन्दी। खास क' कए ओतए अंग्रेजी दिश झुकाव देखाइत अछि आ अपन भाषामे पढ़ाइ ओतहु नईं के बराबर अछि। अइसँ देसी लोक-कला आ शिल्पक अवसानक खतरा सेहो बढ़ि गेल अछि। हस्तकला आ शिल्प तथा संगीतकेँ बचएबाक सेहो एक मात्र बाट हमरा लोकनिक सोझाँ अछि- अपन भाषामे मजगूत पकड़ बनाएब।

स'ब विषयक अध्यापक भाषाक अध्यापक छथि

भाषाक संग-संग समस्या-समाधानक प्रक्रिया दिमागमे कोन तरहें चलैत अछि आ कोन तरहें अवधारणाकेँ विकास दिसि ल' जाइत अछि, जँ ई बात बूझ'मे आबि जाए त', अवबोध'क माध्यम तय करब आसान भ' जाएत।

अवधारणाक विकास अवधारणा देलासँ नईं होइत अछि। साहित्य अमूर्त अछि, मुदा ओतहु अवधारणाक विकास होइत रहैत अछि। सामाजिक अध्ययनक बहुत-रास अवधारणा नक्शाक मदतिसँ बनैत आ खुजैत अछि। नक्शाकेँ गणितक मदतिसँ बूझल जा सकैत अछि। नक्शाकेँ बुझबा लेल विशेष समझ गणिते विकसित करैत अछि। नक्शा त' इतिहासहु पर नजरि देबामे मदति करैत अछि। गणितक अवधारणा स्थूल आ स्थायी अछि। तें ओकर तानी-भरनी बूझ'मे आबि जाइत अछि, मुदा सामाजिक अध्ययनक तानी-भरनी बदलैत रहैत अछि, जे अपनहि भाषासँ समझमे अबैत अछि।

प्राथमिक शिक्षाक सम्पूर्ण पाठ्यचर्यामे भाषाक परिप्रेक्ष्य विशेष महत्त्व रखैत अछि। विभिन्न अर्थपूर्ण सन्दर्भक माध्यमहिसँ भाषा सबसँ नीक पढ़तिएँ सीखल जा सकैत अछि, तें स'ब विषयक शिक्षण एक अर्थमे भाषा-शिक्षण सैह थिक। ई परिप्रेक्ष्य माध्यमिक शिक्षाक अमूर्त विचारक सन्दर्भमे भाषाक केन्द्रीयताकेँ रेखांकित करैत अछि। जतए शुरुआती स्तर पर सन्दर्भगत अर्थ भाषा प्रयोगकेँ बढ़ावा दैत अछि, ओतहि बादक स्तर पर भाषेक माध्यमे अर्थ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। भाषा शिक्षाक केन्द्रमे अछि, आ हरेक अध्यापक पहिने भाषा के अध्यापक होइ छथि, तखन विषय के।

— एक प्रतिभागी

चिन्तनक आजादी आ मौलिकताक प्रश्न

गाँधी जी न'ब शिक्षाक योजना बनबैत अपन एकटा मित्रक पाठशालामे बच्चासँ प्रश्न केलनि-एक व्यक्ति एक टा सेब चारि आनामे कीनैत अछि आ एक टाकामे बेचैत अछि।

त' ओकरा की भेटतै? गाँधी जीक मानब छलनि जे बच्चा जँ जवाबमे ई नई कहैत जे 'ओकरा जेल भेटतै' त' निश्चये ओ भाषाकेँ गणितसँ तालमेल बैसाकए देख'वला आजाद भारतक बच्चा कहएबा योग्य नई हएत। हमरा लोकनिकेँ अपन बच्चाकेँ एहेन आजादी देबए पड़त, जइमे ओ अपन भाषामे अपन बातक अभिव्यक्ति क' सकए। ई अप्पन भाषामे शिक्षा मात्रसँ सम्भव अछि।

विज्ञानक विद्यार्थी लोकनि पर दोहरा दायित्व रहैत अछि। हुनका लोकनिकेँ एक संगे दू भाषाक ज्ञान हएब जरूरी अछि। एकटा समझ के भाषा आ दोसर विज्ञान के। विज्ञान बिम्बमे गप नई करैत अछि। ओ सपाटबयानीक माँग करैत अछि। ओ स्पष्ट टिप्पणी करैत अछि। विज्ञानक विद्यार्थीकेँ 'नॉन-कन्फर्मिस्ट' सेहो होअए पड़तनि। बुद्ध कहने छलाह जे 'बातकेँ मात्र अइ कारणेँ नई मानि ली जे बुजुर्ग कहलनि अछि, ओकरा जाँची, परखी, तखन मानी।' ई सब किछु शिक्षामे अपन भाषाक आजादीक बिना सम्भव नई अछि। ई आजादी शिक्षककेँ देब' पड़त। हरेक शिक्षक, भने ओ गणितक होथि अथवा विज्ञानक, ओ भाषेक अध्यापक होइ छथि। भाषा पढ़ाएब सबहक दायित्व थिक, भाषा अध्यापक मात्रक नई। गणित, समाज विज्ञान आ अर्थशास्त्र सन विषयमे मौलिक चिन्तन सेहो अपन भाषामे शिक्षा मात्रसँ सम्भव अछि।

भाषा आ अन्य विषय

भाषा हमरा लोकनिक चेतनामे अछि। अवधारणाक ढाँचा अही भाषासँ बनैत अछि। अपन अनुभवक आधार पर हमरा लोकनि अपन मानसमे आएल चित्रकेँ जीवन्त क' कए ज्ञानकेँ आगू बढ़बै छी। गणित, विज्ञान-स'बमे एहेन अवधारणा अछि जे भिन्न-भिन्न चीजक स्वरूपकेँ हमरा लोकनिक सोझाँ ओही रूपमे राखि जाइत अछि। जेना पृथ्वी गोल अछि; एतए गोलक अवधारणा हमरा लोकनिक सोझाँ स्वतः बनि जाइत अछि। दू रोटी, तीन भाइ। हम रोटीकेँ 'दू' सँ, भाइकेँ 'तीन'सँ जोड़ि पबै छी। चारि बर्खक बच्चा ई सब किछु क' लैत अछि। कुर्सीक परिभाषा सबहक नजरिमे अपन-अपन आ अलग-अलग हएत। कोन तरहें एक धारणा अथवा अनेक धारणाक सम्बन्ध बनैत अछि, ई बात बच्चा जनैत अछि आ स्कूलमे जे परिभाषा देल जाइत अछि, जइ तरहें देल जाइत अछि, ओहिसँ भरिसक सन्देह उभरैत अछि। बच्चाक एकटा अपन भाषा होइत अछि, जइमे ओ अपन व्यक्तित्व गढ़ने रहैत अछि, एक भाषा समाजक होइत अछि, फेर विषयक भाषा सेहो महत्त्वपूर्ण होइत अछि, जइमे ओकरा जानकारी उपलब्ध करबाक रहै छै। जे भाषा बच्चा सभ जनैत रहैत अछि, ओइमे पढ़ब-लिखब, बातकेँ बूझब आसान होइत अछि। एकर क्रियान्वयन कोना हो, सैह हमरा लोकनिकेँ तय करबाक अछि। जँ पढ़बा-लिखबाक

शुरुआती बर्खमे अपन समझ थिर करबा लेल अथवा बढ़ाब' लेल अपन शब्द भेटए त' बात आसान भ' जाइत अछि, छवि बनाएब आसान भ' जाइत अछि।

स्कूलमे गणितमे 'सिलिण्ड्रिकल' लेल 'बेलनाकार' शब्द सिखाओल जाइत अछि। ई शब्द बच्चाक दिमागमे कोन छवि अनैत अछि-गेन्द, सर्कल, गोल, वृत्ताकार, गोलाकार इत्यादि।

तकनीकी शब्दावली आ बच्चाक समझ

एतए हमरा लोकनि बच्चाक पूर्वज्ञानसँ न'ब ज्ञान आ न'ब शब्दावलीक सम्बन्ध बनब' चाहै छी। बेलनाकारक बदला 'चूडीक आकार', 'गेनक आकार' सन शब्द किये नईं लेल जा सकैत अछि। चुम्बक लेल आकर्षण-विकर्षण शब्दक उपयोग करै छी। ई शब्द सामान्यतया उपयोग नईं कएल जाइत अछि, त' अनठीया शब्दक भार किये बढ़ाओल जाए तें बच्चाक स्थिति ई अछि जे शक्ति, तागत, बल, ऊर्जा-अइ स'ब शब्दक उपयोग एकहि तरहें करै छी, जखन कि तकनीकी उपयोगमे ओकर अर्थ बदलि जाइत अछि। हम बच्चाक धारणाकें उपयोगमे आनि सकै छी? किछु उदाहरण एन.सी.ई.आर.टी.क पोथीसँ -

सीमाक सैकड़ा

सीमा टिकुलीसँ अलग-अलग तरहें एकटा डिजाइन बनौलक अछि



- ◆ अलग-अलग समूहकें ध्यानसँ देखू आ टिकुलीक कुल संख्याक अन्दाज लगाउ
- ◆ किछु आओर समूहक चित्र बनाउ जाहिसँ 100 टिकुली पूरा भ' जाए। अहाँकें कतेक आओर टिकुली बनबए पड़ल?...

स्रोत: गणितक जादू, पुस्तक 2, कक्षा 2, एन.सी.ई.आर.टी.

बच्चा सभ कतेक सहजतासँ गणित सीख रहल अछि आ अपन आस-पासक जीवनसँ जुड़ि रहल अछि।

पात

की स 'ब पातक रंग, आकार आ कोर एक रंग अछि?

दयाराम कहलनि--हमरा त' पते नई छल जे पात एते तरहक होइ छै। देखू, कोनो गोल अछि, कोनो नमगर आ कोनो तिकोन!

अम्मू बजलीह--एकरा सबहक रंगो कतेक अलग-अलग छै--कोनो कम हरियर त' कोनो गाढ़ हरियर। कोनो पीअर, लाल, बैंगनी छै। एकटा पात छै त' हरियर, मुदा ओइमे उज्जर छाप छै।

शबनम बजलीह--देखू, पातक कोर सेहो कतेक अलग-अलग छै। कोनो पातक कोर सोझ छै, त' कोनोक कटल-फाटल। किछु के कोर त' आरी सन छै। आब हम बनब 'पौधक परी'--अम्मू आ शबनम एकट्टे बजलीह।

किछु पात एकट्टा करू, जेना--नेबो, आम, नीम, तुलसी, पुदीना, हरियर धन्नी। अइ पातकें मीरू आ ओकर महक सूँधू। की, स 'ब पात 'क महक एक-सन अछि? की अहाँ महक मात्रसँ अइ पातकें चीन्हि पाएब?

देखू, कतेक सुन्नर चित्र बनल अछि। हँ, ई सुखाएले पातसँ बनल अछि। अहूँ आब सुखाएल पातसँ अलग-अलग जानवरक चित्र अपन कॉपीमे बनाउ।

स्रोत: आस-पास, पर्यावरण अध्ययन, कक्षा 3

मरुभूमिक लोक अपन अनुभवकें व्यवहारमे आन 'लेल एकटा शास्त्र विकसित कएलनि अछि। ई शास्त्र समाज लेल उपलब्ध पानिकें तीन रूपमे बँटलक अछि। पहिल रूप अछि--पालरपानी, अर्थात् सोझे बर्खासँ भेटैवला पानि। ई धरातल पर बहैत अछि आ एकरा नदी, पेखरि आदिमे रोकल जाइत अछि। पानिक दोसर रूप पातालपानी कहाइछ। ई ओएह भू-जल थिक जे इनारसँ निकालल जाइत अछि। पालरपानी आ पातालपानीक बीच पानिक तेसर रूप थिक रेजाणी पानी। धरातलसँ नीचाँ उतरल मुदा पातालमे नई भेटि सकल, से पानि रेजाणी थिक।

स्रोत: वितान भाग 1, कक्षा 11, हिन्दी, एन.सी.ई.आर.टी.

ई दुन्नू उदाहरण पर्यावरणकें सहज शब्दावलीमे प्रस्तुत करैत अछि। दोसर उदाहरणमे पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी सन जनपदीय शब्दावलीकें सहज रूपमे बताओल गेल अछि;ने कि तकनीकी शब्दावलीमे। बच्चा सब अइ प्रक्रियाकें आसानीसँ बिन रटने बूझि जाएत।

किछु अन्य उदाहरण –

आइ सुगन्धा बहुत प्रसन्न अछि। ओकर स्कूलक स'ब बच्चा, अध्यापक महोदयक संग भोपल घूम' जा रहल अछि। मीनाक्षी मैडम आ राकेश सर बात क' रहल छथि जे कुल कतेक बस चाही।

मीनाक्षी मैडम - हमरा लोकनिकें चारि टा बस चाही।

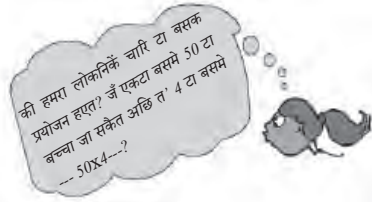
राकेश सर - हमरा लगैत अछि पाँच टा बसक प्रयोजन पड़त।

मीनाक्षी मैडम - हरेक बसमे 50 टा सीट अछि।

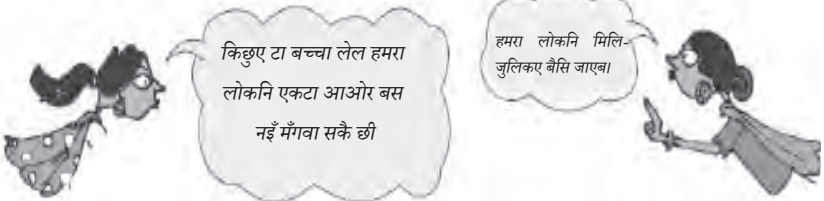
राकेश सर - पहिने पता क' ली जे कतेक बच्चा जा रहल अछि।



कक्षा	बच्चाक संख्या
I	33
II	32
III	42
IV	50
V	53
कुल	210



- ◆ त' कुल मिला क'.....बच्चे जा रहल अछि।
- ◆ जँ हुनका लोकनिकें चारि टा बस भेटै छनि, त' कतेक बच्चा बैसि पाओत?
- ◆ की कोनो बच्चा बैसैसँ रहिओ जाएत?



— स्रोत: गणितक जादू, पुस्तक 2, कक्ष 2, एन.सी.ई.आर.टी.

जल्दी-जल्दी फटाफट

बच्चा सब कक्षामे एकटा गोल घेरावमे बैसल अछि।
ओ सब ई खेल खेला रहल अछि आ गाबि रहल अछि।

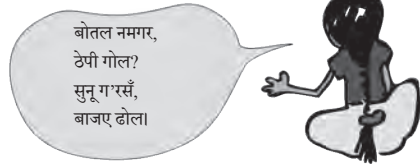
की अछि नमगर, की अछि गोल?
जल्दी बाजू, बाजत ढोला।

रीना कहैत अछि-



सब बच्चा गाबि रहल अछि
की अछि नमगर, की अछि गोल?
जल्दी बाजू, बाजत ढोला।

मोनू कहैत अछि -



आ अइ तरहें खेल चलैत रहैत अछि --

- ◆ अहूँ सब ई खेल अपन कक्षामे खेलाउ। बेरा-बेरी एकटा नमगर आ एकटा गोल वस्तुक नाम बाजू। खेलमे जइ वस्तुक नाम एक बेर बाजि देल जाए, तकर नाम दोबारा नई बजबाक अछि।

स्रोत: गणितक जादू, पुस्तक 2, कक्ष 2, एन.सी.ई.आर.टी.

भीमबेटका दिश

स'ब टा बसमे डीजल भरेलाक बाद, यात्र फेरसँ शुरुह भ' गेला आब बच्चा सबकेँ बताओल गेल जे ओ पहिने भीमबेटकामे रुकत।

अंजन - भीमबेटका की थिक?

रैना मैडम - ई एकटा जगह थिक, जतए बहुत रास गुफा सब अछि आ गुफामे चित्रकारी कएल गेल अछि, जे दस हजार बर्ख पहिने बनाओल गेल छल।

सुमोन्तो - दस ह---जा---र बर्ख! हम त' एकहु हजार बर्ख पहिनेक बारेमे नईं सोचि सकै छी।

गोपी - ओह! एक हजार बर्ख त' बहुत होइ छै। हम त' स'ओ बर्ख पहिनेक बारेमे नईं सोचि सकै छी।

गौरी - हम 100 बर्खक बारे सोचि सकै छी, किएक तँ हमर पिताजीक दादी माँ 100 बर्खक छथि।

मंजीत - एकर मतलब ई गुफा सब लगभग एक सय परदादी माँ एते पुरान अछि!

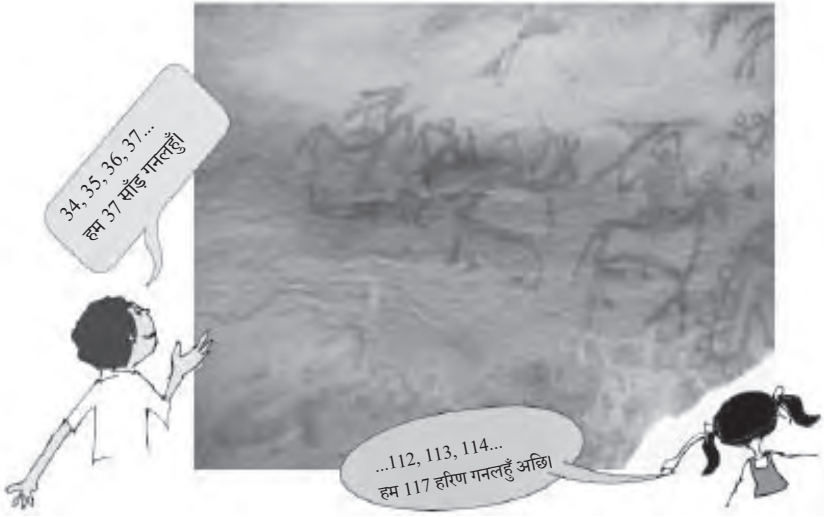
स'ब जोर-जोरसँ हँसि पड़ल - हा! हा! हा!

बच्चा सब गुफामे कएल गेल चित्रकारी देख' चाहै छल। एगारह बजेक लगाति ओ सब भीमबेटका पहुँचल।



शंकर - अइ चित्रमे बड़का-बड़का साँड़ बनल अछि। सुन! हमरा एकटा बात फुराएल अछि। अइ चित्र सबमे साँड़क संख्या गनै छी, तौ हरिणक संख्या ग'ना।

बोनोमाला - हम लोकक संख्या गनै छी। देखी जे बेसी संख्या कथीक अछि--साँड़, हरिण अथवा लोक।



◆ एतए साँड़सँ हरिणक संख्या कतेक बेसी अछि?

मुदा बोनोमाला सबसँ बेसी प्रसन्न छल किएक तँ लोकक संख्या साँड़ आ हरिण दुन्नूक योगफलसँ बेसी छल। मुदा ओकर गनती 200सँ कम छल।

◆ ओ कतेक लोक गनने हएत?

214, 154, 134, 177

गाइड कहलनि जे एतए कुल मिला क' 600 गुफा-चित्र अछि।

आब भीमबेटकासँ विदा हेबाक समय भ' गेल छल।

स्रोत: गणितक जादू, पुस्तक 2, कक्ष 2, एन.सी.ई.आर.टी.

(उपर्युक्त स'ब उद्धरणमे, विषयकेँ भाषाक सहजताक संग प्रस्तुत करबाक सुन्नर प्रयास अछि।)

उच्च शिक्षा आ अन्य विषय

अइसँ जुड़ल दोसर प्रश्न ई अछि जे जँ प्रारम्भिक स्तर पर अइ भाषा सभक उपयोग हो आ हुनका लोकनिकें अइ भाषामे प्रारम्भिक शिक्षा देल जाए त' आगू की हएत? मानि लिअ' ओ दसम कक्षा धरि अइ तरहें पढ़ि लेत, त' फेर आगूक पढ़ाइ ओ कोन भाषामे करता दसम कक्षा धरि ओ सब सन्थालीमे पढ़ाइ केलक त' जखन एगारहमे जाएत अथवा फेर इंजीनियरिंग अथवा मेडिसिन पढ़' जाएत त' ओकर पढ़ाइ कोन भाषामे हैतै? जँ ओ केवल बी.ए., एम.ए. सेहो करत, त' कोन भाषामे पढ़त? जँ ओ संथाली सन आदिवासी भाषहिमे पढ़ाइ करत, त' की हमरा लोकनिक विश्वविद्यालय सक्षम अछि--अइ भाषा सबमे पढ़बै लेल? जँ संथालीमे पढ़ियो लेत, त' तेसर प्रश्न ई हएत जे की ओकरा नोकरी भेटतै? जँ नोकरी नई भेटतै त' किए नई भेटतै? ई केहन व्यवस्था अछि जे अपनहि भाषामे पढ़ल नागरिककें नोकरी नई द' सकए। एतए नोकरी पएबा लेल अंग्रेजीक ज्ञान अनिवार्य भ' गेल अछि। यद्यपि हालमे सौंसे दुनियामे जे निरन्तर गिरावटि आ मन्दीक दौर आएल अछि, तकरा देखैत एक बेर फेर सौंसे दुनियाकें लाग' लगलै अछि जे केवल अंग्रेजीक ज्ञान पर्याप्त नई अछि। हमरा लोकनिकें बच्चा सबकें आ समाजकें ई विश्वास दिआब' पड़त।

प्राथमिक शिक्षासँ ल' क' देशक अर्थव्यवस्था धरि ई तन्त्र पसरल अछि। अगबे अवबोध'क माध्यमक बात नई अछि, बात ईहो हेबाक चाही जे अवबोध'क माध्यम पाबि लेलाक बाद जीवित रहबाक माध्यम की हएत अर्थात् समझ त' हमरा लोकनिकें भेटि जाएत, मुदा हम जीवित कोना रहब? जा धरि एहेन अर्थव्यवस्था आ सामाजिक व्यवस्था नई बनत, ता धरि समझक माध्यमक रूपमे हमरा लोकनिक मातृभाषा आ देशक हजारह भाषा सभक कोनो भविष्य नजरि नई अबैत अछि। तें विवशतामे भनहि हमरा लोकनिक गाममे हिन्दीक मजाक उड़ाओल जाए अथवा हमरा लोकनि अंग्रेजिओक मजाक उड़ाबी, मुदा अन्ततः विवश भ' कए हरेक माता-पिताकें अपन बच्चाकें हिन्दी अथवा अंग्रेजियहिमे पढ़ब' पड़ै छनि।

उच्च शिक्षामे सेहो अइ अवबोधकें ल' क' आगू बढ़बाक प्रयोजन अछि। मुदा किहु वस्तुक मादे विचार करबाक हएत। की स'ब भाषामे एतेक सामग्री उपलब्ध अछि? दुनियामे शिक्षा पर जे एते रास चिन्तन भ' गेल अछि, की ओ स'ब भाषामे उपलब्ध अछि?

— एक प्रतिभागी

सबसँ नीक त' अंग्रेजीमे पढ़ाएब अछि। ओ निश्चिन्त भ' जाइ छथि जे चाहे किछु भ' जाए, एकरा रोजी-रोटी त' भेटि जेतै। जे समाज हमरा लोकनि बनौने छी, प्रश्न ओइ समाजकें बदलबाक सेहो अछि आ तखने हम अवबोध'क माध्यम अपन भाषाकें बना पाएब।

रूस आ जापान, चीन आदि सन दुनियाक आनहु देश अपनहि भाषामे शुरुहसँ ल' क' विश्वविद्यालय स्तर धरि शिक्षा प्रदान केलक अछि। जर्मनी ओएह केलक। चीन ओएह क' रहल अछि। अपन अंग्रेजी लोभक अछैत ओतए चीनी सेहो ज्ञानक भाषा बनल अछि, प्राथमिक स्तरसँ ल' क' उच्च स्तर धरि। मुदा हमरा लोकनिक ओतए एखन एहेन नई अछि। एकर एकटा पैघ परिणाम ई भेल अछि जे हमरा लोकनिक भाषा, ज्ञानक भाषा नई बनि पाओल। आजादीसँ पहिने विभिन्न क्षेत्रमे जे विद्वान होइ छलाह, मौलिक चिन्तक होइ छलाह। ओ बादमे कम होइत गेलाह। जगदीश चन्द्र बसु अपन बहुत-रास पोथी बांग्लामे लिखलनि। बादमे ओही संस्कारसँ प्रेरित भ' कए महान वैज्ञानिक जयन्त नार्लीकर मराठीमे लिखलनि आ हिन्दीमे सेहो लिखलनि। मेघनाथ साहा अपन पोथी बांग्लामे लिखलनि। अइ तरहें ज्ञानक विभिन्न क्षेत्रमे लोक अएलाह आ ओ लोकनि अपन भाषा—मराठी, बांग्ला, तेलुगु, तमिल, मलयालम—ज्ञानकें आगू बढ़ौलनि। बादमे ई घटैत गेला। ई बात बढ़बाक चाही छल, मुदा ओ घटैत गेल, से अइ लेल जे हमरा लोकनिक लक्ष्य केवल उपादेयता भ' गेला। एहेन उपयोगी लोक तैयार करब, जे खा-कमा सकए। पूरा देश एहेन लोक तैयार क' रहल छल, जे सामान बेचि सकए, सामान बेचनिहारक सेवा क' सकए, आ जे सामान बेच' लेल बाहरसँ सामान आनि सकए। अइ स्थितिक सामना करबा लेल अपन भाषामे शिक्षा पर बल देब' पड़त। अपन भाषाकें ज्ञानक भाषा बनबए पड़त आ अइ सब लेल विभिन्न भाषा आ विभिन्न ज्ञानक बीच संवाद बनबए पड़त। वर्तमानमे जे ज्ञानक भाषा अछि अंग्रेजी, तकरहुसँ कैक स्तर पर संवाद कायम करए पड़त।

ध्यान देबाक बात थिक जे रूस जे समाज 1917क बाद रचलक से एहेन समाज बनि रहल छल, जइमे छोटसँ छोट भाषा लेल सेहो स्थान छल। महमूद रसूल हमजातोव सन लेखक, जे दागिस्तानक रहनिहार छलाह, आ अपन खानदानक एहेन पहिल व्यक्ति छलाह, जे पढ़ाइ केलनि। हुनकर भाषा अवार छलनि। अवार भाषा बजनिहार मश्किलसँ 2-4 लाख लोक छल। आब त' भरिसक अहूसँ कम भ' गेल हएत। मुदा अइ 2-4 लाख लोक लेल हुनकर भाषामे पढ़ाइक जे बेवस्था ओतए कायम कएल गेल, तकरे परिणाम छल जे रसूल हमजातोव सन विश्वविख्यात लेखक भेलाह। आ 'मेरा दागिस्तान' हुनकर

विलक्षण पोथी अछि। भरिसक दुनियाक कोनहु भाषामे एहेन दोसर पेथी नई लिखल गेला। दुनियाक दोसर भाषा सबमे ओकर अनुवाद भेल। केवल दू लाख लोकक भाषामे लिखल गेल ई पोथी दुनियाक महान पोथी सबमे गनल गेला। दोसर दिश अफ्रीकामे एहेन नई भ' रहल अछि। ओतएक भाषामे ज्ञानक रचना नई होइत अछि। कीनियाक लेखक अंगूगी अंग्रेजीमे लिखैत महान बनल रहलीह, मुदा जखन ओ अपन भाषा किकियुमे लिखए चाहलनि त' हुनकर बहिष्कार भ' गेल आ आइ ओ निष्कासित जीवन जी रहल छथि। हमरा लोकनिक देश सेहो आइ एहने समस्या सभक सामना क' रहल अछि। अपन भाषाक नीकसँ नीक लेखक कोनो कोनेमे पड़ल रहै छथि। अइ संकटसँ उबरबाक बाट तकैत हमरा लोकनिकें रूस, जर्मनी, चीन, जापान इत्यादि देशसँ सीख' पड़त आ अपन भाषाकें ज्ञान विज्ञानसँ जोड़ए पड़त।

– एक प्रतिभागी

हमर अनुभव

मातृभाषा लेल एते बेसी प्रेम होइतहु हम आइ धरि भूमिति, बीजगणित आदिक गुजराती पारिभाषिक शब्द नईं जनै छी। आब हमरा बूझ 'मे अबैत अछि जे जँ अंग्रेजीक बदला हम गुजरातीक माध्यमे सीखने रहितहुँ, त' अंकगणित, भूमिति, बीजगणित, रसायनशास्त्र आ खगोलविद्याक मादे जे बात सब सीखबामे हमरा चारि बर्ख लागल, से हम एक बर्खमे आसानीसँ सीख लिहतहुँ। ओइ विषय सभक ज्ञान हमरा बेसी आसानीसँ आ अधिक स्पष्टतासँ होइतए। हमर गुजराती शब्द-भण्डार अधिक सम्पन्न भ' गेल रहितए। अइ ज्ञानक उपयोग हम अपन घरमे करितहुँ।

× × ×

हम चाहै छी जे ओइ भाषा (अंग्रेजी)क रत्न सबकेँ आ ओकरहि टा किए, संसारक अन्य भाषा सभक रत्नहुकेँ सेहो हम अप्पन देशी भाषा सभक माध्यमे जुटाबी। रवीन्द्रनाथक अद्वितीय रचनाक खूबीकेँ जान' लेल हमरा बांग्ला सीखबाक प्रयोजन नईं होइत अछि। नीक अनुवादकसँ ओ हमरा भेटि जाइत अछि। गुजराती लड़का आ लड़की सबकेँ टॉलस्टायक कहानी सभक रसास्वाद करबा लेल रूसी भाषा पढ़बाक प्रयोजन नईं होइ छै। ओ लोकनि ओ सब किछु नीक अनुवाद द्वारा पढ़ि लैत अछि।

× × ×

शिक्षाक माध्यम तुरन्त आ कोनहुँ टा मूल्य पर बदलल जेबाक चाही आ प्रान्तीय भाषा सबकेँ ओकर उचित स्थान भेटबाक चाही।

– हरिजन 9-7, 38, पृष्ठ संख्या 177, महात्मा गाँधी के चयनित कार्य (खण्ड V)

5

भाषामे संवाद

(सन्दर्भ: अंग्रेजी आ हिन्दी)

- अंग्रेजी आ हिन्दीक सम्बन्ध
- सन् 1967क बाद
- सन् 1987क दौर
- बदलावक न'ब दौर
- अंग्रेजीक विकासक इतिहास
- न'ब शब्द गढ़वाक प्रयोजन



अंग्रेजी आ हिन्दीक सम्बन्ध

स्वाधीनता आन्दोलनक दौरान आ ओकर बाद देश निर्माणक जे काज भ' रहल अछि, तइमे अंग्रेजी आ अन्य भाषा सभक

सम्बन्ध कखनहुँ नीक त' कखनहुँ समस्यामूलक सेहो रहल। सन् 1947 धरि अइ सभक बीच खास तरहक सम्बन्ध रहल।

स्वतन्त्रता आन्दोलनक दौरान ढेरी रास काज हिन्दी लेल समर्पित छल, स्वाधीनता लेल त' छलहे। ओहि कालक गतिविधि सभमे अपन भाषाक प्रति प्रेम छल, मुदा अंग्रेजी लेल घृणा नई छल। आजादीक दौरान एकटा आओर बात सोझाँ आएल। महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु अपन बहुत रास रचना बांग्लामे लिखलनि। लक्ष्मण शास्त्री अपन भाषामे सेहो लिखलनि आ अंग्रेजियहुमे। मुदा सन् 1947क बाद हालति बदलल। तकर बाद अंग्रेजीक चलनि शुरुह भेल। बहुत रास वर्तमान इतिहासकार हिन्दीक विकासक इतिहास सेहो हिन्दीमे नई, अंग्रेजीमे लिखलनि। वर्तमान समाजशास्त्री लोकनिमे पूरनचन्द जोशीकेँ छोड़ि कए प्रायः सबहक लेखन मूलतः अंग्रेजिएमे अछि।

सन् 1967क बाद

सन् 1967सँ एकटा बदलाव आएल। ध्यानसँ देखल जाए त' 20 वर्षक अन्तरालमे अइ भाषा सभक सम्बन्धमे एकटा अन्तर आएल। सन् 1967क दौरकेँ अंग्रेजीक विरोध अथवा घृणाक दौर कहल जा सकैत अछि। कार के पट्टी आ ठाम-ठाम बोर्ड बदलल गेल। बिहार आ उत्तर प्रदेश आदिमे ई विरोध किछु बेसी भेल। जे लोकनि अंग्रेजीक विरुद्ध ई आन्दोलन चला रहल छलाह, से बिसरि गेलाह जे हुनकर बच्चा कतए आ कोना शिक्षा ल' रहल

अछि। तें अहू बातक संज्ञान लेल जेबाक चाही, जे ओहि समयमे अंग्रेजी माध्यमसँ शिक्षा-दीक्षा लेनिहार बच्चा पर की असरि पड़ि रहल छल। दोसर दिसि ईहो ध्यान देबाक थिक जे एहेनो लोक छलाह जे अंग्रेजी पढ़नहुँ बिना आगू बढ़ैत गेलाह। हुनका लोकनिक संग किछु नीक भेल अथवा बेजाए, ताहू पर शोध भ' सकैत अछि। अइ दौरक शुरुआत बहुत पहिनहि भ' चुकल छल, जकरा नेहरू जी 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'मे सेहो रेखांकित कएने छलाह--प्रश्न उठैत अछि जे इंग्लिस्तानक दू रूपमेसँ कोन इंग्लिस्तान हिन्दुस्तानमे आएल? शेक्सपियर आ मिल्टन वला; उदारवादी लेख आ बहादुरीक कारनामा वला; राजनीतिक क्रान्ति आ आजादीक हकमे लड़ाइ करै वला; विज्ञान आ उद्योगक तरक्कीकेँ आगू बढ़बै वाला इंग्लिस्तान एतए आएल, अथवा असभ्य आचरणसेवी मारि-पीट करै वला, वर्बर व्यवहार करै वला आ सामन्तवादी आ प्रतिक्रियावादी इंग्लिस्तान आएल? (हिन्दुस्तानक कहानी पृ- 333)-ई व्यापारी लोकनि स्पेनक होथि अथवा पुर्तगालक, एकटा पैघ प्रश्न त' उठिते अछि? किछु अइ तरहक परिस्थिति उत्पन्न भेल जे थोड़ेक टा लोकक एकटा अलग वर्ग बनैत चलि गेल। ओ अपन काज अंग्रेजीमे करैत रहल। हुनका लोकनिकेँ समस्त सुविधा भेटैत रहलनि आ ओ आगू बढ़ैत रहलाह। सन्तुलन कायम नई भ' पाबि रहल छल। बहुसंख्यक लोक पिछड़ि गेल।

विद्यालयी शिक्षामे हिन्दी आ अंग्रेजीक परिदृश्य किछु अलगे तरहें उभरल। ओतए पहिलसँ पाँचम कक्षा धरि अंग्रेजी नई छल। छठमसँ अंग्रेजीक पढ़ाइ शुरुह कएल जाइ छल। शिक्षक लोकनिकेँ अंग्रेजी सम्बन्धी व्याकरण आ ज्ञान बहुत नीक छल मुदा ओ बाजि नई पबै छलाह। यद्यपि लिखैमे सबहक अंग्रेजी बहुत नीक होइ छल मुदा बाज'मे प्रवाह नई छल। ई दौर लोककेँ दू वर्गमे बाँटि गेल-एक वर्ग अंग्रेजीमे काज करै वला आ दोसर वर्ग एकर विरोध करै वला।

सन् 1987क दौर

आब जँ सन् 1987क दौर पर आबी त' देखब जे इलेक्ट्रॉनिक आ न्यू मीडियाक विशाल दुनिया हमरा लोकनिक सोझाँ आएल। ई दौर संचार क्रान्तिक छल। एकटा दोसरे दुनियाक अनुभव होए लागल आ एहेन लागए लागल जे अंग्रेजीक बिना बच्चा सब पिछड़ि जाएत। गाम-देहातमे सेहो अंग्रेजी विद्यालय खूज' लागल। स'ब ई मानए लगलाह जे अंग्रेजीक बिना ओ पाछू छूटि जाएत। एखनहुँ ओएह दौर चलि रहल अछि। गलते सही, मुदा धुरझार अंग्रेजी बजनिहारक प्रभावो पड़त आ काजो भेटत। आइ जे समाज हमरा

लोकनिक सोझाँ अछि, जे आर्थिक आ सामाजिक संरचना ठाढ़ भेल अछि, से अंग्रेजीक अछि। प्रश्न ई उठैत अछि जे एकर बाद की हएत? की अइ विषय पर हमरा लोकनि किछु सोचि पाबि रहल छी अथवा फेर आगूए भागल जा रहल छी? ई सोचबाक अथवा एकर संज्ञान लेबाक फुरसति किनकहु अछि नई जे बच्चाक समझ कोन भाषामे बनत। रोजी-रोटी त' दोसर भाषाक माध्यमे भेटि सकैत अछि मुदा समझ त' अपनहि भाषामे बनैत अछि! हमरा लोकनिकें ईहो देखबाक चाही जे आजादीक बाद भारत कतेक वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री अथवा समाजशास्त्री तैयार केलक। निश्चये एकर कारण शुरुआती दौरमे अपन भाषामे शिक्षाक नई हएब थिक।

बदलावक न'ब दौर

एमहर भाषाक सन्दर्भमे फेरसँ बदलावक दौर आबि रहल अछि। फ्रांस, चीन, रूस, जापान भाषाक सम्बन्धमे न'ब ढंगें सोचब शुरुह केलनि अछि। आब ओ लोकनि अपनहि भाषामे बाजब पसिन करैत अछि। मुदा भारतक स्थितिमे फर्क अछि। हमरा लोकनि एखनहुँ हीन-ग्रन्थिक शिकार छी। अपन भाषाक प्रति समाजक सोच बहुत सकारात्मक नई अछि। एकर सबसँ पैघ प्रमाण ई अछि जे आत्मसम्मान त्यागियो क' हमरा लोकनि अपन बाल-बच्चाकें अंग्रेजी पढ़ब' चाहै छी।

अंग्रेजी-हिन्दीक सम्बन्धकें हमरा लोकनिकें अहूँ दृष्टिँ सोचए पड़त जे दुनियाक कैकटा बड़का-बड़का देश अपन भाषाकें जीवित रखितहु आ ओकरा प्रति सम्मान रखितहु पैघ-पैघ देशक बराबरी केलक अछि आ विकासक कतारमे आगू निकलल अछि। हमरा लोकनिकें अप्पन लोक सभकें ई भरोस दिआबए पड़त जे अपन भाषाक सम्मान करैत दोसरहुक भाषाक सम्मान कएल जा सकैत अछि।

अपन भाषाक सम्मानमे कीनियाक प्रतिष्ठित अंग्रेजी लेखक अंगूगी अंग्रेजीमे लिखब छोड़िकए अपन भाषा कीकियूकें अपना लेलनि। पाब्लो नेरुदाक इच्छा छल जे अपन भाषामे पढ़ाइ लेल विश्वविद्यालय खुजए, मुदा दोसर भाषा सेहो ओही पंक्तिमे विराजमान रहए।

अंग्रेजीक विकासक इतिहास

हमरा लोकनिकें अहूँ दिसि ध्यान देबाक चाही जे अंग्रेजी भाषा सेहो एकटा दीर्घ संघर्ष क' कए एतए धरि पहुँचल अछि। पहिने अंग्रेजी इंग्लैण्ड आ अमेरिकामे कुली, किसान

आ मजदूर समुदायक भाषा सेहो छल आ शेक्सपियर सेहो अही भाषाक छलाह। अर्थात् अंग्रेजी केवल प्रभुत्वेक भाषा नई थिक।

जँ अइ भाषाक विकास पर ग'र करब त' देखब जे जे लड़ाइ हमरा लोकनिक भाषा लड़ि रहल अछि, से अंग्रेजिओ लड़ने अछि। 16-17म शताब्दी धरि अंग्रेजी ज्ञानक भाषा नई छल। अपन उचित स्थान लेल ओहो संघर्ष केलक अछि। स्थिति ई छल जे किछु कुलीन स्कूलक प्रांगणमे किओ अंग्रेजी नई बाजि सकै छल। फ्रांसिस बेकन दोस्ती अथवा प्रेम सन विषय पर लेख अंग्रेजीमे लिखलनि। मुदा न्याय, दर्शन, गणितक पोथी, ज्ञानक बात लैटिनहिमे लिखलनि। इंग्लैण्डक वैज्ञानिक लैटिनहिमे लिखै छलाह। न्यूटनक मातृभाषा अंग्रेजी छलनि, मुदा ओ अपन मुख्य पोथी लैटिनहिमें लिखलनि। ओहो ओइ समय लैटिनेक उपयोग केलनि। जखन वैज्ञानिक कमतर वर्गसँ आबए लगलाह, तखन अंग्रेजीमे लिखल जाए लागल आ उनैसम सदी धरि अंग्रेजी पसरि गेल। शिक्षामे अंग्रेजीक जोर बढ़ैत गेल। आइ ज्ञानक सबसँ पैघ भाषा अंग्रेजिए अछि।

न'ब शब्द गढ़बाक प्रयोजन

एक दिसि दुनियाक समस्त भाषा एक भ' रहल अछि त' दोसर दिश भाषा-शास्त्री लोकनिक ईहो चिन्ता अछि जे सीमा टूटि रहल अछि। बजार रशियन, अंग्रेजी, जर्मन इत्यादि सबकेँ एक रंग क' देलक अछि। वस्तुतः भाषा एक दोसरासँ मुठभेड़ करिते-करिते बनैत अछि। हिन्दी सेहो

भाषा मात्र शब्द आ अर्थसँ नई बनैत अछि बल्कि शब्द छविसँ सेहो बनैत अछि। जेना हम कमल शब्द ली, त' हमरा लोकनिक मोनमे एकटा फुलाएल कमलक फूलक छवि बनैत अछि, जे कमल शब्दसँ अलग तरहक होइत अछि। अर्थात् हमरा लोकनि कमलकेँ जइ रूपमे देखलहुँ अछि, हमरा लोकनि लेल ओएह कमल अछि। उदाहरण लेल, जँ कहल जाए जे 'बालकनीमे ठाढ़ छौंड़ी उदास अछि' त' हमरा लोकनिक मोनमे एक तरहक बालकनी बनैत अछि। आजुक भागम-भागमे अइ अर्थ छवि सब लेल अवकाश नई रहि गेल अछि।

— एक प्रतिभागी

समस्त शब्द अंग्रेजी आ आन भाषा सबसँ ओहिनाक ओहिना लेलक अछि। मुदा स'ब भाषाक अपन खास चरित्र होइत अछि, अपन खास स्वभाव होइत अछि, अपन एकटा मिजाज होइत अछि ओ भाषा दोसर भाषा सबसँ मुठभेड़ क' कए अपना

ढंगसँ न'ब शब्द गढ़ैत अछि, जेना हिन्दी 'ऑफीसर'सँ 'अफसर' बनौलक, 'रिपोर्ट'सँ 'रपट', 'सीमेण्ट'सँ 'सिलमिट', बनौलक; मुदा आइ हिन्दीमे अंग्रेजीसँ मुठभेड़ करैत न'ब शब्द गढ़बाक आत्मविश्वास निरन्तर कमि रहल अछि। अंग्रेजीक अधिकांश शब्दकें ओहिनाक ओहिना ओकर उच्चारणक संग स्वीकार करबाक दबाव निरन्तर बढ़ि रहल अछि, जेना हिन्दीमे 'केनेडा'कें 'कनाडा' कहब, 'ओलिम्पिक्स'कें 'ओलम्पिक' कहब अथवा चाइनाकें 'चीन', 'रशिया'कें 'रूस' लिखबाक चलनि कम भ' रहल अछि। हमरा लोकनि ओइ शब्द सभकें

ओकर मूले उच्चारणक संग रखबाक अभ्यासी भ' रहल छी। ई प्रवृत्ति अइ बातक संकेत थिक जे हालक बर्षमे हिन्दी एकटा आत्महीनताक शिकार भेल अछि। एकर सरोकार समाजक तागतसँ बेसी अछि, भाषाक तागतसँ कम। डॉ- राममनोहर लोहिया भाषा पर बहुत रास काज कएलनि। ओ कहै छलाह जे शब्द मँजलासँ अबैत अछि। शब्द सबकें माँजल जेबाक चाही। शब्द सबकें माँजि

कए न'ब शब्द बनएबाक जे अवगति हिन्दी अथवा आन भाषा सबमे छलै, ओ नहुएँ-नहुएँ एमहर आबि कए अंग्रेजीक सोझाँ ठेहुनियाँ द' देलक अछि। ई एकटा पैघ संकट थिक। अंग्रेजी सेहो हिन्दीसँ बहुत रास शब्द लेलक अछि आ ओकरा अपना ढंगे गढ़बाक प्रयत्न केलक अछि। अर्थात् हिन्दी आ अंग्रेजीक बीच अबरजात बढ़ल अछि। हिन्दी अथवा कोनहुँ टा भाषामे हरेक भाषाक शब्दकें टटका बसात जकाँ बेखटक आब' देबाक

संवादक प्रयास

सेकमोल लदाखी भाषाक मानकीकरणक दिशामे प्रयास क' रहलाह अछि। अइ लेल ओ लदाखी लिपिमे एकट अखबार रेवाई ओजर (त्मूप वक्रमत) आ एकटा पत्रिका मेलांग (डमसवदह) निकालै छथि। संगहि ओ बच्चा सभक कहानी दुनू भाषा, अंग्रेजी आ लदाखीमे सोझाँ आनबाक महत्त्वपूर्ण कार्य कएलनि अछि।

तकर अलावा ओ प्राथमिक स्तरक ई-वी-एस- पाठ्य-पुस्तक एवं भाषाक विकाससँ सेहो जुडल छथि। यद्यपि ई पाठ्य-पुस्तक अंग्रेजी माध्यममे अछि, मुदा लदाखी भाषाक झाँकीक संग। हिनकर योजना छनि जे अध्यापक लोकनि लेल एकर लदाखी संस्करण सेहो निकालल जाए। अइ तरहेँ जखन नहुएँ-नहुएँ स्थानीय लदाखी भाषामे सामग्री छपिकए आब' लागत, तखन लदाखी भाषामे पाठ्य-पुस्तकक आएब सम्भव भ' सकत।

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह
का आधार-पत्र, 1-3, पृ- 60

चाही। मुदा हमरा लोकनिकें अइ दिश ध्यान देब' पड़त जे हिन्दी निरन्तर अपन केबाड़ बन्न करबाक प्रयास केलक अछि। एकर सांस्कृतिक अथवा ऐतिहासिक कारण भ' सकैत अछि। मुदा हमरा लोकनिकें ईहो सोचए पड़त जे जे भाषा सब अपन केबाड़-खिड़की फूजल रखलक, ओएह फलित-पल्लवित भ' रहल अछि। ध्वनि, विचार, शब्द आ वाक्य संरचनाक स्तर पर भाषा सभक निरन्तर मेल-जोल होइत रहैत अछि।

भाषा हमरा लोकनिक सरोकारसँ बनैत अछि। देश-विदेशमे जतए कतहु लोक मारल जा रहल अछि, जँ हुनका सबसँ हमरा लोकनिक सरोकार नइँ अछि, त' हमरा लोकनिक अभिव्यक्ति संवेदनहीन भ' सकैत अछि।

भाषाक मुद्दा एकटा पैघ सामाजिक लड़ाइक मुद्दा सेहो थिक। अइ लड़ाइमे भाषा एकटा अनिवार्य उपकरण थिक। मुदा हमरा लोकनिकें अइ बृहत्तर लड़ाइमे भाषिक अस्मिताकें चीन्हि क' अंग्रेजीक संग संवाद करैत न'ब शब्द गढ़बाक प्रयास करए पड़त। अंग्रेजीक लेखक लोकनि ई काज केलनि अछि।

एकटा सम्भावना जनपदीय भाषा सभक शब्दक माध्यमे बनि सकैत अछि। हिन्दी जनपदीय भाषासँ जतेक कटैत गेल, ओतबे एकहरी होइत चल गेल। जेना रंग, स्वाद, सम्बन्ध, कृषि आ वाणिज्यक जतेक शब्द जनपदीय अनुभवक अछि, ओतबे शहरी अनुभवक नइँ अछि। जेना दर्द सम्बन्धी एहेन बहुत रास शब्द भोजपुरीमे अछि, जे हिन्दीमे नइँ अछि--दुखाता, बथता, पिड़ाता, टभकता, कसकता, टसकता आदि। स'ब शब्दक अलग-अलग अर्थ सन्दर्भ अछि। एकटा भाषिक संस्कृतिक रूपमे हमरा लोकनिकें हिन्दीकें ठाढ़ करबाक अछि। शब्द सबसँ मुठभेड करैत ओकर तागत घुरएबाक अछि, तें अंग्रेजी शब्द सभक प्रतिस्थानी न'ब शब्द तकबाक बेहतर पद्धति सोचए हएत। अइ तरहें भाषा सभक बीच शब्द सभक अबरजात आ संवादक बाट खोलए पड़त।

6

मुद्दा आ चुनौती

- शिक्षकक तैयारी
- सामाजिक तैयारी
- प्रशासनिक तैयारी



अवबोध'क माध्यमके क्रियान्वित रूप देब' लेल एकटा नमहर बाट तय करबाक अछि। आजादीक 75 बर्खक बादहु हमरा लोकनि ई तय नई क' पौलहुँ अछि। ई बाट एसगरे शिक्षक, शिक्षा प्रशासन अथवा शिक्षाविद् नई क' सकै छथि। हमरा लोकनिक सोझाँ स'बटा एहने मुद्दा आ चुनौती अछि, जइमे समुदाय, शिक्षक आ प्रशासनक भूमिका महत्वपूर्ण होएत। एकरा बूझब अत्यन्त आवश्यक अछि।

शिक्षकक तैयारी

दीर्घ कालक बाद अपन भाषा दिश घुर्बाक ई एकटा शुरुआत थिक, जइमे सबसँ पहिल आ महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षकक अछि, जे बच्चाक माता-पिताक बाद बच्चाक संग सबसँ बेसी समय बितबैत अछि। छोट बच्चाकेँ स्कूलसँ जोड़बाक, शिक्षासँ जोड़बाक दायित्व शिक्षके पर अछि। स्कूलक भाषा आ घरक भाषामे पुल बनएबाक काज सेहो शिक्षके करै छथि। अइ दूरीकेँ तखनहिं तय कएल जा सकैत अछि, जखन शिक्षा बच्चाक भाषामे देल जाए। अइ लेल शिक्षक लोकनि के प्रशिक्षित हएब अनिवार्य अछि। राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005 ई संस्तुत करैत अछि जे आदिवासी क्षेत्रमे जइ शिक्षक लोकनिकेँ नियुक्त कएल जाए, हुनका ओतएक स्थानीय भाषा सिखाओल जेबाक चाही। शिक्षककेँ ओतएक स्थानीय भाषामे शिक्षण करबाक स्वायत्तता देबए पड़त। कक्षामे बहुभाषिक बच्चाक पहिचान क' कए संसाधनक रूपमे ओकर उपयोग करबाक स्वायत्तता सेहो अइसँ जुड़ल अछि।

- हमरा लोकनिक देशमे बहुत-रास बोली आ भाषा अछि। बच्चाक भाषामे हमरा लोकनिक ओतए एखनहुँ उपलब्ध नई अछि। संविधानमे 22 टा भाषा सूचीगत अछि। समस्या ई अछि जे अइ 22 भाषामे हमरा लोकनिक ओतए पोथी उपलब्ध नई अछि।

ई दायित्व शिक्षक आ सरकार दुनू पर अछि। जँ सरकार अपन दायित्व-निर्वाहमे असफल भ' जाइत अछि त' शिक्षकक दायित्व बनैत अछि जे ओ बच्चाकें ओकर मातृभाषामे शिक्षा प्रदान करए। एन.सी.एफ.-2005 शिक्षकक अइ स्वायत्तताक संस्तुति करैत अछि।

- कक्षामे बच्चाकें पढ़बै कालक अनुभवक आधार पर शिक्षककें पाठ्य सामग्री तैयार करबाक उपक्रम करए पड़तनि। बच्चाक कक्षाक जरूरतिक अनुसार विकसित हेबाक कारणे ई सामग्री एकटा बेहतर पाठ्य-सामग्री भ' सकैत अछि।
- अधिगम ओइ सामाजिक वातावरण/सन्दर्भसँ अत्यधिक प्रभावित होइत अछि, जतएसँ शिक्षार्थी आ शिक्षक अबै छथि। सीखबाक प्रक्रिया, एते धरि जे सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रियाकें स्कूल आ कक्षाक सामाजिक वातावरण प्रभावित करैत अछि। एकरा ध्यानमे रखैत विद्यार्थीक मनोवैज्ञानिक विशिष्टताक बदलामे ओकर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ राजनीतिक सन्दर्भ सब पर आओर बेसी बल देबाक प्रयोजन अछि- अइमे अवबोध'क भाषाक भूमिकाक पहिचान करए पड़त।
- शिक्षककें भाषाक व्यापक समझ हेबाक चाही।
- प्राथमिक स्तर पर बच्चाक भाषा सबकें सुधारने बिना ओकरा ओही रूपमे स्वीकार करबाक चाही, जाहि रूपमे ओ होइत अछि। कक्षा चारिक बाद जँ समृद्ध आ रुचिकर अवसर देल जाए, त' बच्चा सब स्वयं भाषाक मानक रूप ग्रहण क' लैत अछि, मुदा अइ प्रक्रियामे बच्चा सभक घरेलू भाषाक प्रति उचित सम्मानक भाव बनल रहबाक चाही। ई स्वीकार करी जे गलती, अधिगमक हिस्सा होइत अछि आ बच्चा सब जखन अइ जोगरक भ' जाइत अछि त' ओ स्वयं ओइमे सुधार क' लैत अछि। गलती आ कमी पर ध्यान देबाक बदला बेसी समय बच्चाकें विस्तृत, रुचिकर आ चुनौतीपूर्ण निवेश देल जेबाक चाही।

मातृभाषाक माध्यमे शिक्षासँ कक्षामे पढ़ाइकें समृद्ध करबामे सुविधा हएत, शिक्षार्थी लोकनिक अधिकाधिक प्रतिभागिता हएत आ बेहतर परिणाम निकलत। अइ उद्देश्य लेल पर्याप्त सुविधा उपलब्ध करवाओल जाए। मातृभाषामे शिक्षाक प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सुनिश्चित कएल जाए ताकि शिक्षार्थी ओहेने माध्यम अपनएबामे संकोच नईं करए, जइमे ओ आसानीसँ बूझ सकए।

— भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र, 1-3, पृ- 151

- सीखल कोना जाइत अछि, अध्यापक लोकनिमे अइ बातक समझ बनाओल जाए ताकि ओ ओकर अनुकूल वातावरण बनाबथि।
- वंचित आ अन्यथा असमर्थ बच्चा सभक अन्यान्य आवश्यकताक संग सिखबाक आवश्यकताकेँ सेहो ओ बूझथि।
- दोसर भाषाक पढ़ाइक पद्धति दिसि सेहो शिक्षककेँ विशेष ध्यान देब' पड़तनि।
- पढ़एबाक एहेन ठोस तैयारी हेबाक चाही जे व्यावहारिको हो आ सैद्धान्तिको।
- संसाधनक रूपमे बहुभाषिकताक उपयोग कोना करी, एकर प्रशिक्षण देल जेबाक चाही।
- संगहि ईहो बताओल जेबाक चाही जे बहुभाषिकताक सीमा की-की अछि?
- शिक्षककेँ निरन्तर बच्चाक अभिभावक लोकनिसँ संवाद करबाक चाही।
- सेवापूर्व आ सेवारत प्रशिक्षण कार्य सबमे-समझक भाषा, बहुभाषिकता, विभिन्न भाषामे संवाद आ भाषा सभक स्थिति-सन-सन विषय सबकेँ शामिल कएल जेबाक चाही।
- विद्यालय सबमे बच्चाक बजबाक-सुनबाक क्रिया पर जोर देल जेबाक चाही, केवल लिखबा पर जोर नई हो।

सामाजिक तैयारी

- आइ हरेक समुदाय अपन बच्चाकेँ अंग्रेजी माध्यममे शिक्षित करब' चाहैत अछि। हुनका लोकनिकेँ बुझब' पड़त जे अंग्रेजी माध्यमसँ पढ़ल हुनकर बच्चा मातृभाषामे शिक्षित बच्चाक तुलनामे कम सृजनात्मक हएत। ओ स्कूलक शिक्षाकेँ अपन जीवनसँ जोड़िकए समुदायक वास्तविकता सबसँ तारतम्य बैसेबामे सक्षम नई हएत। अंग्रेजी माध्यमक शिक्षा-प्रणाली शिक्षार्थी लेल रटन्त विद्या बनिकए रहि जाइत अछि। ई समुदायक प्रतिनिधि लोकनिक दायित्व (जेना गामक पंचायत) हेबाक चाही। हुनका ई बूझ' पड़तनि जे बच्चाक मातृभाषामे शिक्षा ओकरा रचनात्मक हेबाक संग-संग आत्मविश्वाससँ पूर्ण आ सामर्थ्यवान बनबैत अछि। आइ हमरा लोकनिक सोझाँ ई पैघ चुनौती अछि जे समुदाय (अभिभावक लोकनि)क एहेन समझ हमरा लोकनि कोन रूपमे बनाबी।
- समाजक सोझाँ पढ़ाइकेँ ल' क' माध्यम-भाषा सम्बन्धी मुख्य रूपसँ दू टा समस्या अछि--एकटा आजीविकाक समस्या आ दोसर सामाजिक प्रतिष्ठा अथवा मान-

अपन भाषामे पढ़िकए

राजस्थान राज्य सेवा परीक्षामे हिन्दी माध्यममे प्रथमहि प्रयासमे टॉपर लोकनिक श्रेणी (2007मे तृतीय स्थान)मे उच्च स्थान पर सफल भ' कए जितेन्द्र कुमार सोनी एकटा अत्यन्त गौरवपूर्ण उपलब्धि अर्जित केलनि। प्रश्न- अहाँक अनुसार अइ परीक्षामे हिन्दी माध्यम ल' क' तैयारी एवं सफलता प्राप्त करबाक मादे की विचार अछि?

सोनी--हमरा नजरिमे माध्यमसँ कोनो फर्क नई पड़ैत अछि। जइ माध्यममे हम अपन उद्गार आ समझकें प्रभावी पद्धतिएँ व्यक्तक' सकी, से माध्यम हमरा लोकनि लेल उपयोगियो अछि आ उचितो। हालहिक परिणाम हिन्दीक प्रति पूर्वाग्रहकें तोड़ैत नजरि अबैत अछि।

— प्रतियोगिता दर्पण/जनवरी/2010, पृष्ठ 46-48

सम्मान। अइ दुन्नू समस्यासँ निपटबा लेल एकटा दीर्घ सामाजिक तैयारीक प्रयोजन देखल जा रहल अछि, जइमे मीडियाक पैघ भूमिका भ' सकैत अछि। समाजमे विभिन्न समुदाय आ अभिभावक लोकनिसँ जुड़िकए विश्वास दिअबाक हएत जे अंग्रेजिए टा एकमात्र पढ़ाइक माध्यम नई अछि।

- अइ लेल विभिन्न क्षेत्रक मातृभाषा-माध्यमसँ पढ़िकए लक्ष्य धरि पहुँचल आ सफलता प्राप्तकएल महत्वपूर्ण

व्यक्तिक साक्षात्कार आ अनुभवकें मीडिया (प्रिण्ट इलेक्ट्रॉनिक, नुककड़ नाटक आदि)क माध्यमे हुनका धरि पहुँचाओल जाए।

रोजगारक चुनौती-1

आइ बजारक भाषा अंग्रेजी अछि। मात्र भाषायी ज्ञानक आधार पर अंग्रेजी जननिहार उमेदवार शीघ्रहि रोजगार प्राप्त क' लैत अछि जखन कि देशी भाषा जननिहार कुशल उमेदवार रोजगारक दौड़मे पाछू रहि जाइत अछि। आखिर किऐ? आइ एतए बाहरी बहुराष्ट्रीय कम्पनी सबमे अवबोध 'क माध्यम अंग्रेजी अछि। रोजगार लेल समझक माध्यमक दिशामे सरकारकें सोचए पड़तै आ अपन किछुएक नीति सबमे बदलाव आनए पड़तै। यद्यपि आइ सौँसे विश्वमे मन्दीक दौर आएल अछि, अइसँ लोक सभक बीच ई समझ बनए लागल अछि जे मात्र अंग्रेजी पढ़िकए रोजगार नई प्राप्त कएल जा सकैत अछि। लोककें रोजगारक सम्भावना देशी भाषा सबमे सेहो देखाए लागल अछि। एकरा विश्वासमे बदलबाक चुनौती सरकारक सोझाँ अछि।

— एक प्रतिभागी

- अपन भाषामे पढ़ि कए काबिल भेल युवा सभसँ गप क' कए हुनकर अनुभवकेँ मीडियाक माध्यमे अभिभावक लोकनि धरि पहुँचाओल जाए ताकि अइ भ्रम (अंग्रेजिए टा सफलताक कुँजी अछि)केँ तोड़ल जा सकए।
- किछु एहेन विद्यालय सभक उदाहरण सोझाँ राखल जाए जे मातृभाषामे शिक्षण करवाकए महत्वपूर्ण लोक तैयार केने होअए--जेना नेतरहाट विद्यालय, सरदार पटेल विद्यालय। अइमे सरकारी स्कूलकेँ विशेष रूपेँ शामिल कएल जाए।
- अइ सामाजिक तैयारीमे अध्यापकक भूमिका सेहो महत्वपूर्ण अछि। अध्यापक अपन विद्यार्थी सबहक अभिभावक लोकनिक संग एहेन बैसकी आयोजित करथि, जइमे केस स्टडी आदि द्वारा मातृभाषाक महत्त्व बताओल जाए।
- रोजगार सम्बन्धी समस्यासँ निपटबा लेल उद्योग धन्धामे अपन भाषाक महत्त्व पर रोजगारक विभिन्न क्षेत्र (जेना डॉक्टर, आई.ई.एस. आदि)मे मातृभाषा-शिक्षाक उपयोगकेँ ध्यानमे रखैत कहानी बुनैत नुक्कड़ नाटक आदि लिखल जाए आ ठाम-ठाम (गाम आ शहरक स्कूल सबमे) खेलल जाए। अइमे किछु एन.जी.ओ.क सहायता लेल जा सकैत अछि।
- स्कूलक शिक्षक लोकनि अपन दायित्व-निर्वाहमे असमर्थ भेल जा रहल छथि, बच्चा सबकेँ हुनका लोकनिक मातृभाषामे शिक्षा नईं भेटि पाबि रहल छनि, शिक्षा लेल आधारभूत सुविधा नईं भेटि पाबि रहल छनि। एहनामे ओतएक विद्यालयी प्रशासन अर्थात् विद्यालयक प्रधानाचार्यक दायित्व बनै छनि जे ओ बच्चाकेँ मातृभाषामे शिक्षा देब' लेल शिक्षक लोकनिकेँ प्रोत्साहित करथि, अइ लेल ओ ओतएक समुदायक सहायता सेहो ल' सकै छथि। बच्चाक ज्ञान-निर्माण लेल बच्चा, शिक्षक एवं समुदायक बीच प्रधानाध्यापक एकटा सेतुक काज करथि। अइ काज लेल अपन प्रशासनिक नीतिकेँ तरल बनाबथि।

प्रशासनिक तैयारी

- सही अर्थमे गाम-गाम आ बच्चा-बच्चा धरि शिक्षा पहुँचएबा लेल राज्य स्तर पर हमरा लोकनिकेँ भरि पोख तैयारी करए पड़त। शिक्षा राज्य एवं केन्द्रक साझी दायित्व थिक। मातृभाषामे शिक्षा देब' लेल राज्यकेँ हरेक स्तर पर, अर्थात् समुदाय, प्रशासन, विद्यालयी प्रशासन, शिक्षक इत्यादि सबहक बीच तालमेल बैसाकए निकेनाँ तैयारी करबाक हएत।

उच्च शिक्षा: एकटा चुनौती

बच्चा जखन अपन मातृभाषामे शिक्षा प्राप्त क' कए उच्च शिक्षा लेल विश्वविद्यालय पहुँचैत अछि, त' प्रश्न उठैत अछि जे ओकरा मातृभाषामे शिक्षा देब' लेल विश्वविद्यालयमे सुविधा अछि? जँ अइ लेल सुविधा नइँ अछि, त' की बच्चाकें अपन मातृभाषामे परीक्षा देबाक अधिकार छै? जँ छै त' की ओकर काँपीक मूल्यांकन अंग्रेजी माध्यमक विद्यार्थीक समान कएल जाइत अछि? की ओ पीएच-डी-क शोध-प्रबन्धकें अपन मातृभाषामे लिखि सकैत अछि? उच्च शिक्षामे समझ के माध्यमक समस्या हमरा लोकनि लेल, विश्वविद्यालय लेल एवं देश लेल सेहो सबसँ पैघ चुनौती थिक।

— एक प्रतिभागी

अधिकार देब' पड़तै। विद्यालय प्रबन्ध समितिसेँ समुदायक भागीदारी सेहो सुनिश्चित कराओल जेबाक चाही। राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा-2005 सेहो कहैत अछि जे एहेन कएलासँ विद्यालयी प्रशासन अधिक लचीला भ' सकत। ओ स्थानीय रूपसँ पाठ्य-सामग्री तैयार करबामे भूमिका निमाहि सकैत अछि। अइ पर सेहो विचार कएल जेबाक चाही। ई एकटा बेहतर पद्धति भ' सकैत अछि।

- शिक्षाक अधिकारक कानून लागू भ' गेला पर लाखक लाख शिक्षक लोकनिक बहाली करबाक प्रयोजन सेहो हएत। एते पैघ संख्यामे शिक्षक अएला पर पैघ संख्या में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान सेहो खोलए पड़त। अइ पर विचार करबाक आवश्यकता हएत।
- बच्चाक भाषामे पोथीक उपलब्धता पर कोनो कार्य योजना बनबए पड़त।
- अइ सम्बन्धमे राज्य सरकार एवं शिक्षक लोकनिक बहुत पैघ दायित्व भ' जाइत अछि। सम्भव अछि जे बच्चा सब लेल ओकर भाषामे पाठ्य-पुस्तक निर्माणमे बेसी समय लागए। अइ दीर्घ अवधिक बीच राज्य सरकार एवं शिक्षक लोकनिकें अइ

- अइ तैयारीमे केन्द्रक अहम भूमिका हएत। केन्द्रक ई दायित्व थिक जे ओ राज्यक संग तालमेल बनाबए। अइ लेल शिक्षक, समुदाय, अभिभावक इत्यादिक संग संगोष्ठी, परिचर्चा, संवाद, परिसंवाद करबाक हएत। तकर बाद अइ तैयारीकेँ कार्यान्वित करबा लेल केन्द्रकेँ राज्य संगें मिलिकए शिक्षक आ प्रशिक्षक तैयार करबाक हेतै, ताकि बच्चाकेँ अपन भाषामे बजबाक, लिखबाक, पढ़बाक आ संवाद करबाक अवसर भेटै।
- आब शिक्षाक अधिकारक कानून पास भ' गेल अछि। एकर अधीन विद्यालय समिति सबकेँ किछु

- सम्बन्धमे संवाद कायम करए पड़तनि। अइ पर केन्द्र सरकारक कोनो आपत्ति सेहो नई अछि। मूलतः ई राजनीतिक एवं प्रशासनिक निर्णय थिक।
- हमरा ओतए बहुत रास भाषा अछि। तें बच्चा सब लेल तैयार कएल जाइ वला पाठ्य-सामग्रीमे हमरा लोकनिकें ओइ भाषा सबहक लोककथा, लोकगीत आ लोककला इत्यादिकें सेहो शामिल करबाक हएत। प्रत्येक भाषाक श्रेष्ठ लेखक हमरा लोकनिक देशमे छथि। हुनका लोकनिक सहायतासँ सेहो पाठ्य-सामग्री तैयार कएल जा सकैत अछि।
 - अवबोध'क भाषाक दृष्टिँ वर्तमान अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमक पाठ्यक्रम सबमे बदलाव आनए पड़त।
 - भाषा सम्बन्धी शोधमे अपन भाषा आ हिन्दीमे बेहतर शोध करबाक प्रयोजन हएत।
 - हिन्दी आ अन्य भारतीय भाषा सबमे मौलिक रूपसँ विज्ञान, समाजविज्ञान आ कला आदिक पोथी लिखै पर जोर देल जाए। अइ लेल विश्वविद्यालय सबसँ सेहो सम्पर्क कएल जेबाक चाही।
 - सन्दर्भ ग्रन्थ/पाठ्य-पुस्तकक अंग्रेजीसँ हिन्दी आ अन्य भारतीय भाषा सबमे अनुवाद कएल जाए आ द्विभाषी तथा बहुभाषी शब्दकोश सेहो तैयार कएल जाए।
 - पहिलसँ पाँचम कक्षा धरि बच्चाक भाषामे क्रमशः किछु विषय पढ़बाक-पढ़एबाक क्रिया पर बल देल जाए। अइ लेल ओकर अवबोधकें मजगूत आधार देब' लेल किछु प्राइवेट स्कूल सबसँ सेहो संवाद स्थापित कएल जेबाक चाही।
 - विश्वविद्यालय सभक संग मिलि कए भाषा, समाजविज्ञान, विज्ञान आदिक शिक्षण सम्बन्धी पाठ्यक्रम चलाओल जेबाक बात पर विचार कएल जेबाक चाही। अइ पाठ्यक्रममे अपन भाषामे विषयक समझक महत्त्व पर विशेष बल देल जेबाक चाही।

रोजगारक चुनौती-2

दिल्लीक उत्तर पच्छिम जिलामे एशियाक सबसँ पैघ सब्जी मण्डी आजादपुरक ठीक सोझाँ सड़कक ओइ पार एकटा विशाल पुनर्वासीय बस्ती अछि-जहाँगीरपुरी। एतए रहनिहार प्रायः बाशिन्दाक बेवहारमे बादशाह जहाँगीरक बादशाही मिजाज झलकैत अछि। बस्तीक एक छोर पर एकटा सुखाइत झील भलस्वा अछि त' दोसर दिश एक नई कैक टा झील अछि, जइमे अइ बस्तीक लोक प्राण फूकै छथि। अइ बस्तीमे प्रौद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई.टी.आई.) सेहो अछि। जइमे प्लम्बिंग, स्पाईनिंग, डाइंग, फिटर, प्रिण्टिंग सन-सन

कैकटा व्यावसायिक कौशलक प्रशिक्षण देल जाइत अछि। बात अइ बस्तीक कातमे बसल- 'अयोध्या टैक्सटाइल' आ आई.टी.आई.क अजीबो-गरीब सरोकारक थिक। अइ मिलमे कपड़ा बनएबाक आ ओइ पर छपाइक काज होइ छल। अही कार्यक प्रशिक्षणसँ सम्बन्धित काज होइ छल। अही कार्यसँ प्रशिक्षण-सम्बन्धी पाठ्यक्रम आई.टी.आई.मे छल। आश्चर्यक बात ई अछि जे एतएसँ प्रशिक्षण प्राप्तनवयुवक लोकनिकें अइ मिलमे काज नई देल जाइ छल, अप्रशिक्षित लोककें राखि लेल जाइ छल। सबहक मोनमे एकहि टा विचार कुलबुलाइ छल जे प्रशिक्षित कमासुतकें भरिसक बेसी दरमाहा देबए पड़त, तें हुनका लोकनिकें काज पर नई राखल जाइ छल। मुदा आई.टी.आई.क प्राध्यापक एवं प्रशिक्षणार्थी लोकनिक संग जखन मिलक कमासुत लोकनिसँ संवाद भेल त' बात स्पष्ट भेल। संस्थानमे समस्त प्रक्रियाक जानकारी अंग्रेजी अथवा मानक हिन्दीमे देल जाइत अछि। मिलक पुरान कमासुत देशज शब्दावलीक उपयोग करै छल, जे संस्थानसँ प्रशिक्षण प्राप्त युवक बूझि नई पबै छल। अन्ततः कमासुत लोकनिक देशज तकनीकी शब्दावलीकें पाठ्यक्रमसँ जोड़ल गेल। मात्र एकटा पाठ्यक्रम नई बल्कि आओरो पाठ्यक्रम सबमे ई प्रयास भेल आ लोककें स्थानीय मिल सबमे काज भेटब आब मोशिकल नई रहल।

— एक प्रतिभागी

परिशिष्ट-1
राज्य सभमे विभिन्न स्तर पर माध्यम भाषा

क्र.	राज्य	प्राथमिक	माध्यमिक	उच्चतर माध्यमिक
1	आंध्र प्रदेश	तेलुगु, उर्दू, उड़िया, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, कन्नड़, तमिल	तेलुगु, उर्दू, उड़िया, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, कन्नड़, तमिल	तेलुगु, उर्दू, उड़िया, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, कन्नड़, तमिल
2	अरुणाचल प्रदेश	अंग्रेजी, हिंदी	अंग्रेजी	अंग्रेजी
3	असम	असमिया, बांग्ला, बोडो, अंग्रेजी	असमिया, बांग्ला, बोडो, अंग्रेजी, हिंदी, अन्य	असमिया, बांग्ला, बोडो, अंग्रेजी, हिंदी, अन्य
4	बिहार	हिंदी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अन्य
5	छत्तीसगढ़	हिंदी, अन्य	हिंदी, अन्य	अंग्रेजी, हिंदी
6	गुजरात	गुजराती	अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी	अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी
7	गोवा	अंग्रेजी, कोंकणी, मराठी, उर्दू, कन्नड़	अंग्रेजी, मराठी	अंग्रेजी, मराठी
8	हिमाचल प्रदेश	अंग्रेजी, हिंदी	अंग्रेजी, हिंदी	अंग्रेजी, हिंदी
9	हरियाणा	अंग्रेजी, हिंदी	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत
10	जम्मू और कश्मीर	डोगरी, अंग्रेजी, हिंदी, कश्मीरी, उर्दू	डोगरी, अंग्रेजी, हिंदी, कश्मीरी, उर्दू	डोगरी, अंग्रेजी, हिंदी, कश्मीरी, उर्दू
11	झारखंड	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत	बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत	बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत
12	कर्नाटक	कन्नड़, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मलयालम, संस्कृत, अरबी	कन्नड़, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मलयालम, संस्कृत, अरबी	कन्नड़, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मलयालम, संस्कृत, अरबी
13	केरल	मलयालम, अंग्रेजी, तमिल, कन्नड़	मलयालम, अंग्रेजी, तमिल, कन्नड़	मलयालम, अंग्रेजी, तमिल, कन्नड़
14	मध्य प्रदेश	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, मराठी	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, मराठी	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू
15	महाराष्ट्र	मराठी, हिंदी	अंग्रेजी, मराठी, हिंदी	अंग्रेजी, मराठी, हिंदी
16	मणिपुर	अंग्रेजी, हिंदी, मणिपुरी	अंग्रेजी, हिंदी, मणिपुरी	अंग्रेजी, हिंदी, मणिपुरी
17	मेघालय	अंग्रेजी, गारो, खासी	अंग्रेजी	अंग्रेजी

18	मिजोरम	मिजो अंग्रेजी	मिजो, अंग्रेजी	मिजो, अंग्रेजी
19	नागालैण्ड	अंगामी, आवो, अंग्रेजी, हिंदी, कोन्यक, लोथा, सेमा	अंगामी, आवो, अंग्रेजी, हिंदी, कोन्यक, सेमा	अंगामी, अंग्रेजी, हिंदी,
20	उड़ीसा	अंग्रेजी, उड़िया	अंग्रेजी, हिंदी, उड़िया	अंग्रेजी, हिंदी, उड़िया संस्कृत
21	पंजाब	अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी	अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी	अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी
22	राजस्थान	हिंदी	हिंदी	हिंदी
23	सिक्किम	अंग्रेजी	अंग्रेजी	अंग्रेजी
24	त्रिपुरा	बांग्ला, कोकबोरोक, अंग्रेजी	बांग्ला, अंग्रेजी	बांग्ला, अंग्रेजी
25	तमिलनाडु	अंग्रेजी, तमिल	तमिल, तेलुगु, मलयालम, उर्दू, कन्नड़	तमिल, तेलुगु, मलयालम, उर्दू, कन्नड़
26	उत्तराखंड	हिंदी	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू
27	उत्तर प्रदेश	हिंदी	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत	अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत
28	पश्चिम बंगाल	बांग्ला	बांग्ला, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, उड़िया, तमिल, तेलुगु, गुजराती, तिब्बतन, नेपाली	बांग्ला, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, उड़िया, तमिल, तेलुगु, गुजराती, तिब्बतन, नेपाली
29	अंडमान और निकोबार	बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु	बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु	बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु
30	चंडीगढ़	अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी	अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी	अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी
31	दादर और नगर हवेली	अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, मराठी	अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, मराठी, संस्कृत	अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, मराठी, संस्कृत
32	दमन और द्वीव	गुजराती, अंग्रेजी	गुजराती, अंग्रेजी	गुजराती, अंग्रेजी
33	दिल्ली	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू
34	लक्षद्वीप	मलयालम	अंग्रेजी, मलयालम	अंग्रेजी, मलयालम
35	पुदुच्चेरी	अंग्रेजी, तमिल	अंग्रेजी, तमिल	अंग्रेजी, तमिल

स्रोत- इम्प्लीमेंटेशन ऑफ थ्री लैंग्वेज फॉर्मूला इन इण्डियन स्कूल्स-ए स्टडी, भाषा विभाग, एन.सीई.आर.टी., नई दिल्ली, 2009, पृ-80-83

ई प्रसन्नताक बात थिक जे वर्तमान समयमे ढेरी रास आदिवासी क्षेत्रक भाषा सभ माध्यम-भाषाक रूपमे प्रयुक्त होअ' लागल अछि आ भाषा सभमे प्राथमिक स्तर पर सामग्रियो तैयार होअए लागल अछि। भविष्यमे आओरो बेसी संख्यामे भारतीय भाषा (आदिवासी क्षेत्रक भाषा सहित) सभकेँ माध्यम-भाषाक रूपमे प्रयोग कएल जाए।

संदर्भ

- शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964-66, शिक्षा मंत्रालय, 1966.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, शिक्षा मंत्रालय.
- क्रियान्वयन का कार्यक्रम 1992 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986), शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय.
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा स्कूली शिक्षा 2000, एन.सी.ई.आर.टी.
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एन.सी.ई.आर.टी.
- भारतीय भाषाओं का शिक्षा, आधार पत्र 1.3, 2006, एन.सी.ई.आर.टी.
- पटनायक, डी.पी. 1986, स्टडी ऑफ लैंग्वेज. रिपोर्ट. नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी.
- भारतीय भाषाओं का शिक्षण, आधार पत्र 1.3, 2006, एन.सी.ई.आर.टी.
- गांधी, एम.के. हिंद स्वराज. भारतीय मत, 1909
- बच्चों के मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009, कानून और न्याय मंत्रालय (विधान विभाग), भारत सरकार
- चॉम्स्की, एन. 1959. रीव्यू ऑफ स्कीनर्स वर्बल बिहेवियर. लैंग्वेज 35.1: 26-58
- व्योगोत्स्की, एल.एस. 1978. माइंड इन सोसाइटी: द डेवेलपमेंट ऑफ हायर साइकोलॉजिकल प्रॉसेस. कैंब्रिज, मास: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- कूपर, के. (2009). लैंग्वेज: आवर मीडियम ऑफ अंडरस्टैंडिंग. जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन, वॉल्यूम XXXV, नंबर. 1. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी. (ISSN: 0972-5628)
- कपूर, के. ईएलटी एंड सोशल जस्टिस इन मल्टीलिंगुअल क्लासरूम. बेबीलोनिया, टेमा 1, 2021, पृ. 24.
- भारतीय भाषाओं का शिक्षण, आधार पत्र 1.3, 2006, एन.सी.ई.आर.टी.
- होल्ट, जॉन. शिक्षा की बजाय. न्यू: बैलटाइन बुक्स, 1974.
- अंग्रेजी शिक्षण, आधार पत्र 1.4, 2006, एन.सी.ई.आर.टी.
- प्रभु. एन. एस. 1987. सेकेंड लैंग्वेज पेडागॉजी. ऑक्सफोर्ड: न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- डोवेरा, एस. 2005. इलेक्टिसिज्म इन मेथोडोलॉजी. एमएस., एनएफजी. इंग्लिश.
- फेलिक्स, पॉल. 1998. लर्निंग टू रीड इंग्लिश: द मिक्सड कोड वे. इन विवियन बेरी एण्ड ऑर्थर एमसी नेल (सम्पा.) पॉलिसी एण्ड प्रैक्टिस इन लैंग्वेज एजुकेशन. हांग कांग: डिपार्टमेंट ऑफ़ करिकुलम स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ़ हांग कांग. पृष्ठ.175-193

- वेस्ट, माइकल. 1941. लर्निंग टू रीड अ फॉरन लैंग्वेज लॉगमैन: यूके. (लर्निंग टू रीड अ फॉरन लैंग्वेज, एण्ड अदर एसेस ऑन लैंग्वेज टीचिंग. (न्यू एड.). लंदन, न्यूयॉर्क, लॉगमैन, ग्रीन (1955)
- मैथ-मेजिक, किताब 2, कक्षा दूसरी के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक, एन.सी.ई.आर.टी., 2007
- लुकिंग अराउंड, ऐंवायमेंट, स्टडीज, कक्षा तीसरी के लिए पाठ्यपुस्तक, एन.सी.ई.आर.टी. 2006
- वितान, भाग-1, कक्षा ग्यार्वी के लिए सप्लिमेंट्री रीडर हिंदी में, एन.सी.ई.आर.टी., 2006
- हरीजन, 9-7, 38, पृष्ठ संख्या 177, महात्मा गाँधी के चयनित कार्य (खंड V) द वॉइस
- ऑफ ट्रुथ (कंप्लीट बुक ऑनलाइन) भाग-II खंड XI: बेसीक ऐज्यूवेशन एंड स्टूडेंट बेसीक ऐज्यूवेशन)
- <<https://www.mkgandhi.org/voiceoftruth/basiceducation.htm>> रीड अ
- इस किताब के प्रथम भाग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अध्याय 4.11, 4.12, 4.14, 4.18,22.6,22.20
- भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र

टिप्पणी

टिप्पणी

समस्त शिक्षा विद्यार्थी लोकनिक क्षेत्रीय भाषा (मातृभाषा) द्वारा देल जेबाक चाही।

— नई तालीम, महात्मा गांधी

शिक्षामे मातृभाषा शिशुक लेल माइक दूध समान अछि। जा धरि मातृभाषाकेँ शिक्षाक माध्यम नई बनाओल जाएत, शिक्षाक सार्वभौमीकरण सम्भव नई हएत।

— रवीन्द्रनाथ टैगोर

32154

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-769-2